

१० अथ गवो नो न कथं ॥ अथादि ॥ १॥ अ इ स र्धं अ न म दा न द स्र अ आ न द
 य अ का ले व अ र्धं को अ व ॥ १॥ अ म क म अ ला म दा स र्धं ॥ १॥ न न
 अ का ग नो र्धं अ अ दा ना न द ॥ अ न नि व र्ण क वि अ ॥ १॥ का न गी स र्धं
 न य या र्धं क थ ॥

श्री ६ न

२१११

आ ११११	२१११
२१११	२१११

ॐ न मा वृक्ष ८६ ॥ अथ
 शीम न था व वा रु न यः
 रु वि वि लि र वा न ॥ य
 थ म र्म च व कि वा या व
 मि ज ल वा मा स ल र व न
 र्म र्म र्म र्म र्म र्म ॥ य उ
 मा न न ॥ ॐ अ धा दि ॥
 य उ मा न स री म ल थ
 व वा रु न नि मि र्म र्म
 क र्म र्म र्म र्म र्म न म
 ॥ य र्म २४ ॥ ॐ मा रु च
 का व मि ॥ वा क्क न यि दि
 मि अ वा र्म र्म र्म र्म
 क्क न या दा र्म र्म र्म
 ॥ थ न ८ वा य वि वि ॥ स
 दा र्म ॥ ॥

न ना य रु म रु य ॥ क ल
 ग या रु व न अ दि र्म
 दि न व रु रु वा य ॥
 ॥ व थ स रु र्म र्म र्म
 ॥ स रु र्म स य ति ग

यदि ल द व ना लि ज
 नि व ल र्म र्म र्म र्म
 स द र्म र्म र्म ॥ स रु र्म
 या रु व न जा न क नः
 ॥ अ रु र्म र्म र्म र्म
 र्म ॥ ग र्म र्म र्म र्म
 को मा वि व र्म र्म र्म
 ना दि वा य ॥ स ना न क र्म
 र्म ॥ व थ अ दि र्म र्म
 र्म र्म र्म र्म ॥ थ न वा य ॥

ज उ मा न न य रु जा रु ति
 ला न थि य र्म र्म ॥ ॐ सि
 दि न रु ति ॥ वा क्क ८६
 न स र्म र्म र्म ॥ ॥
 ॐ अ धा दि ॥ स रु र्म र्म र्म
 र्म ॥ य उ मा न स री म
 र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म
 सा व न स रु र्म र्म र्म
 ॥ य र्म र्म र्म ॥ ॐ अ
 क र्म ॥ रु र्म र्म र्म र्म

...

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दमः प्रविदन्ती वासुदेवाः
 या विष्णुर्वाद्यं श्रीमद्विष्णु
 स्थायन्तु यथा उच्यते
 यथा नृपयज्ञाय नमः ॥
 यथा मन्त्रिस्तुल्यवर्मा
 हि ॥ श्रीदत्तवल्गासविना
 यययस्तु वरिष्ठेभिः
 नाक ॥ ॥ स्तुति ॥
 ॐ निर्मलं कालकृत्या
 यवक्रकानननिवरुः
 नागुद्धकया ययं ग
 नां विनिर्गवक्रधन
 मः ॥ अथ गन्धर्व ॥ वि
 शानं कवय ॥ कृवाणि
 वरुः कृवा अग्निरुः
 कृवा यजमानवियः
 ॥ ॥ गगन ॥ गिवयु
 जा ॥ स्तान ॥ ॐ स्वस्ति न
 ॐ स्वा ॥ यं च न वस्तानं
 ॥ ॐ स्वमन्त्रधृति ॥ अ

लस्तानं ॥ वननसिंदल यज्ञ
 पवीत यथ्यश्रुदवात ॥ ॐ न
 मः ॥ गवायव ॥ धूपदीप
 ॥ ॥ अथ स्तुति ॥ ॐ नमः ॥ मि
 वाय गन्धर्व ॥ अथ ग
 न्धर्व ॥ ॥ अथः
 मानयं च न वरिष्ठेभिः ॥
 ॐ वाचकं सुन्धमि ॥ ॥

गगन ॥ कृमि कर्मका
 वय ॥ यथा अथ विः
 धिमर्क वकल सा चर्न
 ॥ ॥ गगनाद्यवर्चन
 ॥ ॥ ॐ गत्वा यामि
 ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ स्वम
 मन्त्रधृति ॥ ॐ अथा अस्मि
 न् ॥ ॐ यम्य कर्मा ॥ ॐ य
 दस्तुद ॥ ॐ यद्वा नन ॥
 ॐ स्ताना यथि विष्णु ॥
 ॐ यम्य कृ ॥ ॐ द्वावा
 दवा ॥ ॐ चत्वा विष्णु ग
 ॥ ॐ यज्जग ॥ ॐ ॐ दवि

ॐ ॥ ॐ अग्निमी ॐ ॥ ॐ ॐ
यत्नो ॥ ॐ अग्निमी ॐ ॥ ॐ
गन्ना देवी ॥ ॐ उ य द न ॥
ॐ न दी ह्य ॥ ॐ ग न्ना नात्
॥ ॐ व ह स्य न ॥ ॐ या व
कान ॥ ॐ श्री ग न ॥ ॐ
अस्मा क मि न्द्र ॥ ॐ न भा
यत्नो सा य ॥ ॐ स य द न्द्र
नि ॥ अ सो य स्या ॥ ॥
ॐ नि स र्म ग ल द्वा वा र्च नी ॥

ग मा म्भ स्य ज य क ल ग्मा र्च
नी ॥ ॐ स य द्द्र क ल ग्मा य
म्भ स्य ज या य अ म्भ गी य
नी ग कि स रि गा य न म ॥
॥ ॥ अ धा ल स क य न
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रुक्म ल क्री ॥ अ र्ध यि यां च
व ल दा रा य म्भ ल या नि
म र्ध यि ज या ज य पु न द नि
ग क न र्म ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
न म ॥ ॐ अ डि यु क ल
म आ ल्वा वि र्म लि न्द्र व ॥
य न न्द्र ज नि व र्म स्य मा
न ॥ स र्म य द्द्र व र्म ज
य य स्य गी य न म्भ वि र्म
ग डि यि ॥ ॐ य द्द्र न द्य
॥ स न स्य गी म यि य नि
ग सा ग स स न स्य गी उ
य द्द्र व र्म द सा र व ल
वि ॥ ॐ ॐ म म्भ र्म ग
ज म्भ ल स न स्य गी स उ
द स्य म ग ग ट ल य नि
ग्रा गु गु द स्य म्भ अ सि
ग्रा म न्द्र वि न र्म ज्ञा जी
की ज सि न्द्र आ य गि वा

ॐ नि मृदु कृ य क ल ग
 र्च नं ॥ न ग ४ आ दि या
 दि न व ग रू यू ज नं ॥
 ॥ ॐ अ दि या य
 ॐ ग व य अ न्नि यु ग
 वि दे व गाय . आ दि य

न. व. द. स्तु. य. य. न. स्तु.
 स्व. म. नु. ल. य. उ. न. ॥ ॐ. आ. दि.
 त्या. य. ॐ. ग्व. वा. य. अ. न्निः.
 य. त्प. वि. दे. व. ना. य. ॐ. द.
 मा. स. न. न. ॥ ॐ. य. द्वा. स. न. य.
 द्वा. क. व. ॥ य. द्वा. न. र्ह. स. म.
 द्वा. नि. ॥ स. का. ग्व. व. थ. र्म.
 स्तु. ग्व. दि. गु. ज. स्था. त्प. दा.
 व. वि. ॥ आ. दि. न्या. य. म्.
 रु. य. न. य. य. न. म. ॥
 ॐ. आ. दि. त्या. य. ॐ. ग्व. वा.
 य. अ. न्नि. य. त्प. वि. दे. व. ना.
 य. व. क. व. न्द. न. व. का. क. न.
 व. क. ज. क्षा. य. वी. न. व. क.
 मा. ला. य. य. धू. य. दी. रु. व.
 ने. व. द्वा. दि. र्म. क. ल्य. शिः.
 द्वि. व. रु. ॥ व. द. ॥ ॐ. आ.
 क. श्म. ॥ ॐ. आ. स्तु. कं. ज. या.
 म. रु. ॥ ॐ. अ. न्नि. द्वा. न. य.
 वा. दि. ल्य. रु. द्वा. वा. रु. म. य.

कवदवा इं आ सा दया दिह
॥ अथ रुद्र ॥ ॐ कलिं गद
मसं गगनवि सायासु फमी
रव । कास्य या वि ग दे व
स्यं कलि जा मि न मा मु तः
॥ अथ गन्धर्वादि ॥ ॐ नि आः
दि ह्य ग्रह यू जा ॥ ॥

ॐ सा मा य उ मा य आ य यः
य वि दे व ना य ॐ द मा स न
न म ४ यू र्ध्वं न म ४ ॥ ध्यान ॥
ॐ ॐ ग ॐ ग ना म्ब ल ध ल ॐ ग
ग रु ष र्भ ग दा या नि र्दि वा
रु ष क रु धा व ल ॥ द ॥ र्मि
॥ ध्यान यू र्ध्वं न म ४ ॥ श्री रव ह
च न न ॥ ग ता क र्ति ॥ व द ॥
ॐ ॐ म द वा ज स य त्र ० सु वः
द म रु ग रु गाय म रु ग ॥ ॐ
म रु ग गान ना का य उ स्य डि य
य ॐ म म म्भ य य म म्भ य
ग म म्भ वि ग न्त्र य वा मा ना का
सा मा सा कै वा क रु त ० ना का
॥ ॐ श्री ग्वा ॥ ॐ अ क्त क न म्

त म म्भ ल ष र्भ म या म्भ ल य न मि
ष स्वा रु व ता वा जि न ४ द वी ना
धा ना व डु मि य गू नि ४ क क
आ चा ज सा रु ना र्थ वा ज ० म्भ
॥ ॐ सा म क क क क द ॥ ॐ
क र्ति का र्थ स म द्य नि ४
आ य ॥ म्भ उ द वा ना वि र्म
जा नि र्भ मा ॥ म्भ न ॥ अथ
गन्धर्वादि ॥ ॥

ॐ अ ग्ना वा य रु द्वा य दि
ति य ग्ना वि दे व ना य ॐ
द मा स न न म ४ ॥ ध्यान ॥
ॐ व क मा र्था व व व व ४
ग कि र्ग लो ग दा व व ४
च उ रु जा म य न मा व व
द ४ र्था द्वा ना स न ४ ॥ ध्यान
न यू र्ध्वं न म ४ व क क
च न न व क क ग नि ॥ व
द ॐ अ ग्नि म्भ ॥ ॐ य
द रु द ॥ ॐ र्था ना य वि
वि ना ॥ रु द ॥ ॐ य व
मा य द म्भ म्भ ॥ अ व नि
दि मि उ न न । रा व द

उक्तं स्वयं नन्द इत्युक्तं
विदेव नमो मातु न ॥ अथ
गन्ध्यादि ॥

ॐ वृक्षाय नमो नमो नमो
विष्णुय नमो विदेव नमो
ॐ दमास नमो नमो ॥ यः
नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यो न
माल्या विलव नमो कलि
कावद व नमो निख नमो
म नदाया निर्मि रुका
व वदा व ॥ ॐ नमो
य नमो ॥ कं कुम व नमो
नयी गा क नमि ॥ वद
॥ ॐ उद्व नमो ॥ नमो
जा गृही लमि सा यरु
स ॥ ॐ उद्व नमो ॥ अ
मि नमो ॥ अथ नमो
मि नमि ॥ नमो दया यज
मान नमो सीदनी ॥ ॐ वि
वजा ठम मि ॥ ॐ ॐ दं वि
कु ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमि सा
द्यादमी ज नमो मय द ग

कला कुव ॥ नमो नमो
विदेव नमो वृक्ष नमो
मातु न ॥ अथ गन्ध्यादि
॥

ॐ वृक्षाय नमो वृक्ष (न)
ॐ दमास नमो विदेव नमो
ॐ दमास नमो नमो ॥ यः
नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ वृक्ष
देव नमो वृक्ष नमो वृक्ष
नमो वृक्ष नमो वृक्ष नमो
वृक्ष नमो वृक्ष नमो वृक्ष
यकर्म द वृक्ष ॥ ॐ नमो
नमो ॥ ॐ नमो नमो
नमो नमि ॥ वद ॥ ॐ अ
वृक्ष नमो वृक्ष (न) ॥ ॐ ॐ द
नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमि
वृक्ष नमो वृक्ष नमो वृक्ष
काद नमो वृक्ष नमो वृक्ष
नमो वृक्ष नमो वृक्ष नमो
नमो वृक्ष नमि ॥ अथ
गन्ध्यादि ॥

ॐ उ ह्रीं य स का म जी ली
य ल्य वि दे व ना य ॐ उ मा
स न न म ॥ य २ ॥ ध्या नी ॥
ॐ द व दे ल्य गु रू त द्वा ली त
(ध्या नी य तु क्तु लो । द लु भा व
न दो का यो सा द स रू क म
कु ल ॥ ध्या न पू र्ण न म ॥
गी र व लु च लु न ॥ व गा द
न ति ॥ व द ॥ ॐ अ न्ना ल्यः
वि श्व ना व र्ण व क्तु ल्य
यि म क्तु र्ण य य ४ सा मः
यु जा य ति ४ । अ न न स य
मि लि य वि या न ४ गु क्तु
म न्ध स ४ ॐ ल्य ल्ये लि य
मि दं य या मृ र्ण म ४ ॥
सु जा या ॐ ल्य स ग ल्म म
रू र्णि ४ सा म यि व व ग हौ
नू रू व वि द्वा न । अ हि स
या न म मृ गों ॥ ध्या नू द स्या
ध र य क्तु र्हि वि श्व ना
न ॥ ॐ ॐ ल्य द वी वि ॥ ध्या
म नू ना नू व त्मा ना र वः
अ ॥ ध र्ण द वी वि ॥ ध्या म नू

ना नू व त्मा ना र व नू । ३ः
व मि र्ण य अ मा ना दे विः
ध्या वि ॥ म मा नू र्ण ध्या नू
व त्मा ना र व क्तु ॥ सा यी ॥
ॐ य य रा ग व न द स न
व र्ण र्ण र्ण व स न ४ गु
क ग क्तु वि दे व र्ण वि
यु जा न न मा लु न ॥ ॥
अ य ग न्ध दि ॥ ॥

ॐ ग ति ल्य ना य य मा य
यु जा य य वि दे व ना य
ॐ द मा स नै नै म ४ य य
न म ४ ॥ ध्या नू ॥ ॐ ॐ ल्य द
नी ल य मि सो वि दे व द
ग व वा रु न ४ । या न वा नू
ग न य व ४ । क र्ण वा र्क
सु ग स द ४ ॥ ध्या न पू र्ण
२ ४ ॥ क र्ण वी च न्द न रु
वि गा क न ति वी व द ॥ ॐ
ग न्ना द वी ॥ ॐ य म न द र्ण
क न य न मा य गि ॐ ल्य
य थ मा अ ध्या नि षु ७ । ग
नै र्ण अ स य स मा म ग्तुः

काम्ना दस्य वसवानि
वदसु ॥ यजाय नन ॥
सुगु ॥ ॐ गहि द्यु का सु
मी जान ॥ सो ना सु का सु
या रु व ॥ य मा वि सो नि
देव स्य सु य जा नि न्न मा
सु न ॥ अ य म न्धा दि ॥

ॐ गारु व का वा य स्य
य य वि दे व ना य ॐ द
मा स न न्न म ॥ य स्य २ ॥
ध्यान ॥ ॐ क ला ल व व
न ख द्ध व म्म ॥ श्री व व
य द नी ल सिं हा स न रु
म्व मा दू न य य स स्य न
॥ ध्यान य स्य न म ॥ अ
गु व च न न क्का ॥ कः
ग मि ॥ व द ॥ ॐ क या
न मि य ॥ ॐ का वि व
नि स मू द्र स्य ॥ ॐ न मा
सु ग य ॥ सु ग ॥ ॐ
या पी न ॥ गी य रा वृ णी य
सु मा स्या म न या रु व
॥ ना दू का वा वि दे व स्य

सु द जा नि न्न मा इ सु न
अ य म न्धा दि ॥ ॥

ॐ क न व वि य गु का
य व का य य वि दे व
ना य ॐ द मा स न न्न
म ॥ य स्य २ ॥ ध्यान ॥
ॐ धू मा दि वा रु व ॥ स
र्व ग दि ना वि कु ना न ना
ग धा स न ग ना नि स्य क
न व ॥ स्य व व य दा ॥ ध्यान
न य स्य न म ॥ वि वि गु
व द न मि ॥ व द ॥ ॐ क गु
क स्य न्न क न व य सा मः
या अ य म न्धा ॥ स म्म य हि
व जा य गी ॥ ॐ ॐ न्धा ना
स्य स न ॥ हि मा धू म न्न
॥ स मि श्री म हि व य स्य
का व य स्य न ॥ स रु स्य ना
म रु स्य न् ॥ अ न्न स य
त द न्न न म द द्या सा अ
दा स्य वि या व सा स्य हि

शिउ ॥ ॐ अग्नि मू द्रो ॥ ॐ यम
 नदनी ॥ ॐ यन् न दवी निर्जुतिः
 लावव धया स गृ वा स्वलि वि
 कं तात विख्या म्या य धानम
 धी दये दी यिनु म द्वि पुस्त
 त १ नभातु त्ये यदं व कान १
 ॥ ॐ ॐ म म्म व नृदा शु धी रुव
 म धा व म्म उ य १ ला म व स्य ना
 व कं ॥ ॐ त व वा य वृ ह स्य ता
 त्ये म्म या मात न र्कु ता १ अ या
 ० स्या वृ दी महं ॥ ॐ कू विदी
 ग व य व नी य व श्रि य था दा
 त्ये न पू र्व वि पू य १ ॐ ह ह ह
 वां कू वृ दि वा न ना नि ध व हि
 धान म ड किं य न नि ॥ ॐ ग मी
 ग्म न र्ग ग न सु ष स्य ति वि
 य जि च मी व स्य हू म ह व यं
 १ पू या ॥ ॐ व द साम स दू ध
 न कि ता यो पु न द वृ त्त क थ ॥
 ॥ ॐ गी नि य दा वि व कृ म वि

धू (ग्नी या ज्दार्थ ॥ अग्नी य म्म
 नि धान य ॥ ॐ वृ द्म दा स्य ता
 त्व म स्य र्ग ना सू क स्य वा धि
 र्ग न य र्ग वि ता वि ज्य म्म रु ड
 व मी नृ द वा वृ ह द्द म वि न
 (ध सू वी ना १ ॥ ॐ ति ॐ उ
 दि द ग ला क यान ॥ ॥

त ता स गु ल वृ द्म ॥ ॥ ॐ
 द धि का प्रा ति ॥ ॐ व य ० मा म
 ॥ ॐ ॥ १६ ॥ ॐ व सा १ व वि गु म
 सि ॥ व उ ग्म ॥ ॐ य वा स वा
 सा १ व नि वी त आ ग्म १ म्म
 उ (गु या रु व ति दा य मा
 ना १ ॥ ॐ यी ना स १ व य ड न्म
 नि स्वा (ध्मा मन सा द व र्ग क
 १ ॥ व नि नं ड ॥ ॐ य १ सा
 मा धा वा य धि वी य ग्म सा
 डाय वृ ह स्य ति वी स १ य १
 र्ग ग्म मा वि य सा मा य ति य

धर्मा ॥ न नीखि ॥ ॐ य न डा
यवृहस्यति वीस ४ य र्यदिधा
दमृदी ॥ न नत्वा य निद धाम्ना
प्रवदी र्घा युत्वा य वनायव
वृस ॥ वतालि ॥ ॐ य निधा १
स्येय ॥ ॐ धास्येदी र्घा युत्वाः
यनदसि नग्नि ४ ॥ गतिविजी
वामिग नद ४ पुनू वी नाय
स्या यमलि संवयि ध्या ॥ पुनू
॥ ॐ गम वड यावता वतं म
दियरु स्य न स्युधा ॥ उलो क ॥ ध्वा
दिन नमयी ॥ लं वता ॥ ॐ दिन
व्यग र्क ॥ ॐ या ४ रु लनी ॥ ॥
ॐ ति सगुल यूजा ॥ ॥

ता ४ वड विन्नु यूजा ॥ ॥
ॐ सामायजी ता गव ॐ दमा
सन नम ४ ॥ पुनू नम ४ ॥ ध्वा
न ॥ ॐ कृ कृ कृ नम काग
॥ ॐ ता गि म निरु विती ॥ स
क रं स विमान रु धात वी

आहिती धिर्य ॥ सामायजी १
ता गव १ ॥ खलु वन्द न ॥ ॐ
ता कत ॥ ॐ य १ ॥ ववीत ॥ ॐ
तमाला पुष्य धूयदी यरु ल
ने वं यादिसं कल्प सिद्धि न
॥ वद ॥ ॐ ॐ मी ददा वृ सय
ति ० सुवदं महं कृ गाय मह
तं ० वृ यम महं जानना का
य ॥ ॐ य १ ॥ विद्याय ॐ मम
मृ य पुनू ममृ य पुनू ममृ
विजा य ववा मी नाजा सामा
समा कं वा कृ १ ॥ ॐ नाजा ॥
१ ॥ ॐ य १ ॥ ॐ ज्ञ कृ नमृ
तमृ कृ लं वद मया मृ गय
जी लि वस्वा ल वग वाजिन
॥ ॐ वी नाका गा वड मिपु
रु कि ४ कृ कृ न्मा न्नी जसा
रु ना र्य वाज ० म १ ॥ ॐ ता
॥ ॐ गज गता जी वसू नाम
कला वा १ ॥ ॐ धा नि ॥ ॥

जिह्वतूयायवन्दायरुनरु
वनभाइस्तुते॥ अरुगधादि
॥ ॐ गिहामावर्नविधिः॥

[illegible][illegible]

॥१४॥ ॐ वदमा जयन्तु ना
सुपात्तु भावो दिवि। नपि
पिण्ण गवदुलम्युत्तुह ०
ह निपतिक निकेद ० ॥१५॥
ॐ सामधन ० सामा जवन्त
माणु ० सामावीन कर्म (ध
नदागिस्मद नान्विदथ ०
सत्यय पितृश्रवण माददा
नदस्मै ॥१६॥ ॥
धन धातुन वदुपूजा शम
॥ ॥

॥१७॥ ॐ जयन्तु मादियूजा
॥ पूर्वस ॥ पवासयूजा ॥ ॐ
जयन्तु मा पृथिवी मूर्त
धनम ॥ ध्यान ॥ ॐ यो नव
(महावीर्य ४ खड्ग यानि
वैजयद ४। जयन्तु मासदा
ध्यायद्वाप्त वार्यसुत ४ नि
व ४ ॥ ध्यानपूर्यनमू ४ ॥ वद ॥
ॐ वाक्क ए स ॥ ॥ ॐ व
क्रिडागै नमस्तुत्यै को नव
शीखलु वन्दन स्या मय ह्नीयी
तनम ४ ३ ॥

नमि महा यम्। वदवदागसं
यूका जयन्तु मा नमानम ४
॥ जयन्तु मादि ॥ ॥
ॐ ति जयन्तु मायूजावि
धि ॥ ॥
जयन्तु मादि ॥ ॥ ॐ जयन्तु
कासयूजा ॥ ॥ ॐ वलप
जयन्तु मायनम ४ ॥ ध्यान ॥
ॐ दिवाद्रुद्रकृत्तु जयन्तु
तिस्रज्वरसीस्ति तं। मनिन
नारय हस्त ध्यातव्यवल
देवता ॥ ध्यानपूर्य २ ॥ प
मका वृन्दन ॥ कृष्णयूजा
वदीत ॥ वद ॥ ॐ महिधो ४
पृथि ॥ ॥ ॐ तिस्रज्वर
संवासात्तु मिदानपूर्यत्तु
लं गक्रुदेव प्रियनिर्त्यनमा
कुवलिदेवता ॥ जयन्तु मा
दि ॥ ॥ ॐ ति वलि यूजा
॥

गंगा व्यास पूजा ॥ अकुरु ॥ उँ वा
सायतन मूर्तिपूजनमः ॥ ध्यान ॥
उँ वातवर्च्युक्तिरस्य. प्रसक्तं
वनदकल. सर्वज्ञस्तु ध्व
लान्. ध्यायेद्वासुनीश्वरं
॥ ध्यानप्रार्थनमः ॥ कर्पू
वननयीतयज्ञायवीत (ग्य
तप्रार्थनमः ॥ वेद ॥ उँ यस्य
कूर्मा ॥ स्मरु ॥ उँ कायकला
रवेत्तु. तर्क. तर्कियनि
स्मि. त. स्मरु. विज्ञानसर्वज्ञान
मस्तु व्यासदेवत ॥ अरुगंध
दि ॥ ॐ ति व्यासपूजा ॥ ॥

गंगा रुद्रमानपूजा ॥ कनः
गुमिस ॥ उँ रुद्रमायवायु
मूर्तिपूजनमः ॥ ध्यान ॥ उँ वा
यवशमरा. तज्ञानकवर्च
स्तुलावनश. शिखनमूर्धिका
रुक्त. ध्यातुवा रुद्रमानसदा

॥ ध्यानप्रार्थनमः ॥ कूर्कम
वनननकयज्ञायवीतकन
कप्रार्थ ॥ वेद ॥ उँ नीवानुधा
वान् ॥ स्मरु ॥ उँ नकवर्चमहा
वीर्यवायवृष्टिलायनस्त
नमूलवीर्तिरुद्रमर्कनमा
महं ॥ अरुगंधादि ॥ ॥
ॐ ति रुद्रमन पूजा विधिः ॥

गंगा विलीयनपूजा ॥ म्वातस
॥ उँ विलीयनयज्ञाकागमूर्त
य ॐ दमासर्जनमः ॥ प्रार्थन
मः ॥ ध्यान ॥ उँ यीलस्यकल
संस्तु. कूर्कमारुद्रद्वयग
दारुयक. नदिव्य. नाद. सजी
विलीयन ॥ ध्यानप्रार्थनमः
॥ (गमना वननयीतयज्ञाय
वीत ॥ वेद ॥ उँ नकसाक्षा (गम
ति ॥ स्मरु ॥ उँ यीलस्यवर्जसंज्ञा
न. लं कानाशक्तिं सदा ॥ श्री

ॐ २॥ मनोज्ञ नन्दन ॥ ॐ
यज्ञोपवीतक ॥ वेद ॥ ॐ सफ
सुषय ॥ सा ॥ ॐ वट वृक्ष
मायूक ॥ लयकनसदा ॥
विनाशानमस्तु सर्वमाकर्ष्य
मूनीज्यन ॥ अगुगन्धादि ॥
ॐ गि विलंजि विदुजा ॥ ॥

तामनथमध्वनथर्वनज्ञान
हासासदृश ॥ ॐ उल्लोकस्य
निष्ठविजयणीकुन्दाभिद
वताल्लोकाप्रथमनथा
धियतायस्तुर्थायनमः ॥ ॐ
वाल्मीकस्य काश्यपविडिष्टि
कुन्दावायुदेवताकुवाला
कायद्वियनथाधियतायस्तु
र्थाय ॥ २ ॥ ॐ स्वलोका
प्रथमत्रयकुन्दज्वादिषट्
वतास्वलोकापरतायनथा
धियतायस्तुर्थायनमः ॥ ३ ॥

ॐ महालाकस्ययमदग्निर्वि
वृहताकुन्दावृहस्य ॥ ॐ
तामहालाकायवृथन
धियतायस्तुर्थायनमः ॥
॥ ४ ॥ ॐ इनलाकस्य ॥ ज्योतिम
विर्विकुन्दावृत् ॥ ॐ दव
ताइनलोकायवृथनथा
धियतायस्तुर्थायनमः ॥ ५ ॥
ॐ तवलाकस्यविश्वमिगु
विश्विष्टकुन्दा ॥ ॐ दवता
यलाकायवृथनथाधियता
यस्तुर्थायनमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्य
लोकायनदाजविजगता
कुन्दाविश्वदेवतासखला
कायसकनथाधियतायस्तु
र्थायनमः ॥ ॥
ॐ इनसितमिनस्यदिनिनसि
विश्वधिया ॥ विश्वस्यकुवनस्य
धर्मीवृथिवीयकुवृथिवीद

ॐ हृद्य धिर्वासादि ॐ सी १ ॥ १ ॥
॥ ॥ हृमि पूजनं ॥ ॥
ॐ हृद्य स्वा अद्या द वा वन
स्य गिन रव द जित्या क्का ग
न सन स्व र्थे भष न डाय म
रु न क स्मा भ द र्ति पाति य श्च
गृति या गा वी वृ ध न ४ पु न
उ स न थ न जि ना स न स्व गी
उ हृ ग मा ॐ सु ना सा ना ॥ वी
हि पू ज न ॥ २ ॥ ॐ वी हृ य स्व म
॥ हृ य द पू ज न ॥ ३ ॥ ॐ अ ह्म
व म मृ ति का व म गि न य स्व म
य र्वा गा स्व म सि क ता स्व म व
न स्या य स्व म हृ न ल्म स्व म
य स्व म स्व म स्व म लो ह्म व म
सी र्म व म स्व म य र्वा न क
त्य ना ॥ ४ ॥ इ त्य न पू ज
न ॥ ॐ ग त्वा या मि ॥ ॥
स क न थ पू ज ॥ ॐ पु ध मा

ॐ न धि ना सु व ह्म द वा य स्व
ना उ व ना नि वि ष्म अ रि य
य न रा ड ना वा वि हा ता नी श्वा
ति य दि ष ना ॥ १ ॥ ॐ अ न्त्वा
न ॥ ॥ अ न्म क्का अ र्वा न्म न्म
वा न्म र्म वा न्म र्म ४ क नी अ न्
व न्म स र्म व ४ स र्मा मा य न न्म
सि मि न वा र्म ना ॥ २ ॥ ॐ न ॥
ति हृ न य ति वा डि न ४ पु न य
य र्वा का म य त स र्वा न थ ४ अ
ति स र्मा म हि मा न य स्य ना य त
४ य स्व द न्म य ह्म नि न म्म य ४
३ ॥ ॐ गी व्रा न्म धा वा न्म ॥ ४ ॥ ॐ
न थ वा रु न ४ हृ वि न जि ना
य र्वा पु र्म नि हि त म स्य व र्म
४ ग र्वा न थ स म्म व स या ४ स म
४ वि ष्म व य ४ स म न स्य मा
ना ॥ ५ ॥ ॐ दे वा य र्म ४ ॥ ६ ॥
ॐ अ क र्म ॥ ७ ॥ ॐ स क म्म

य॥ ॐ ति नथ पूजा ॥ ॥

शालसासपूजागतासूर्य
पूजा॥ ॐ सूर्याय सकाश्वन
धधियतयआदित्याय ॐ
दमासर्जनमः॥ ध्यान॥ ॐ
सहयनथनूरुपा (लोकम
लं धानि लं नक वरु महा
गर्ह ध्याय इमी मन (धनवि
॥ ध्यान पूष्यनमः॥ नक वन्द
ननक यज्ञाय वीतपूष्यनमः॥
॥ ॐ नमः॥ गी गवेय॥ ॐ आदि
त्यं गर्ह ययसासमनि सहसु
स्य दनिमा वि ज्वरूप॥ यनिवृ
दिह नसिसामा लिम ० ० ०
गगायुषं कृद् द्वितीयमा
ना ॥ ॐ आकृष्ट ॥ ॥ ॐ
नमस्तु मुदिन गाय ध्याति
रूपाय नमः॥ गग जीवस्व
रूपाय नमस्तु स्नान वक्ष्ये

॥ अष्टगन्धादि ॥ ॐ ति नथ
पूजा ॥

गतामवप ति पूजा॥ ॐ गन्ध
लं त्वा॥ कुरुयात॥ ॐ नमाय
लूगमय॥ (गम गमसा॥ ॐ अय
(गो वृ॥ कीमा नी॥ ॐ यग्या
मा॥ ॐ ति की मा र्या दिष्टा

॥ ॥

पूनः सधा गतादि मा कलय
जनं॥ ॐ सधा गता वाम॥ ॐ
वाममद्य॥ ॐ यागत्रय॥ ॐ
यत्यत्रय॥ ॐ तमी गमनी॥

ॐ तिय श्रवक पूजा विधि
॥ गताय श्रुता कयाल पूजा॥
ॐ गन्धनं त्वा॥ ॐ अश्व अशि
क॥ ॐ ज्ञानानियुक्ति ॥ ॐ
धृति धायादा॥ ॐ उ लापि
वतम॥ ॐ तिय श्रुता कया
ल॥

गतामासयका दिष्ट जनं॥ ॐ

अर्द्धमासायना ० सि त्यादि
॥ ॐ अक्षयकृति ॥ ॐ ॐ
डा (गम्भा ४ य कृति ॥ ॐ न क
इत्य ४ स्वाहा ॥ ॐ या (गधा
(ग ॥ ॐ अश्वस्तु यना (ग ॥
ॐ सर्वकृतासि ॥ ॐ अक्षनाय
॥ स्वस्ववदनवृज्जन ॥ माल
का ॥ ॥ सुखादि पूजाथ
न ॥ ॥ ॐ अक्ष ॥ गिव
॥ ॐ नमः ४ गिरुवायय ॥ विष्णु
॥ ॐ ॐ द विष्णु ॥ ग (गसा ॥ ॐ
गम्भनात्वा ॥ कुरु ॥ ॐ नमा
वन्तु गम्भ ॥ हनुमन्त ॥ ॐ ती
वान्धापान् ॥ नाग ॥ ॐ नमा
स्तु (सर्प ॥ इगम्भा ॥ ॐ यातवद
मंगल ॥ इगुलि ॥ ॐ बृह
स्यत ॥ लक्ष्मी ॥ ॐ दिनव्य
वन्त ॥ ॐ विष्णुताम ॥ ॥ १२ ॥
ॐ तिस्रयादि वा विष्णुता ॥

गगाइक पूजा ॥

॥

ॐ दार्द्युत्वा ॥ ॐ गिरिकिपू
का विधि ॥ ॥ ॥
गगावलि ॥ ॐ याथेदि (गम्भा
हा ॥ मता ॥ ॐ अग्निमूर्द्धा ॥ क
लकन ॥ ॐ समित ० संक
त्यथ ० संविद्या ना विष्णुस
मनस्यमानो ॥ ॐ यमूर्यमे
ति ४ सम्वसानो ॥ सिवाकृष्ण ०
सिर्षवता समुचित्वा नाकर्न
जु (मेवनी व्योषि या रुवर्त्तन
१ ॐ यमूर्द्धा यज्ञमाना (धदि ॥
सिधुमद ॥ ॐ ग्रायव ॥ धूप
॥ ॐ धूनसिधु ॥ दीप ॥ ॐ गंगा
सि ॥ रुल ॥ ॐ या ४ रुलनी ॥
नेवद्य ॥ ॐ अन्नयग ॥ ग्वन ॥
ॐ नमः ४ यन्त्रियय ॥ ताया ॥ ॐ
मनाकृति ॥ यतिष्ठा ॥ ॥
जपस्तोत्र ॥ ॐ नत्तावधीसक
नगीथ ॥ गन्धयत्यादिस्तोत्र
स्वस्वमन्त्रनैजयस्तोत्र ॥ ॥
यथावानत्यादि ॥ अरुगच्छ

ति॥ ॥
 यथा कुं गतिरुपयदा जगध
 न॥ ॥ वरसाधन॥ ॥
 घृणा कृति॥ उक्ता पुनीता दि
 घृणा कृति पूरुर्न॥ गति
 ना कृति पूरुर्न॥ समिध
 सह॥ प्रतिष्ठा न कानय॥
 गिला कृति पूरुर्न॥ ॥
 गता यथा कर्म कानय॥
 मनु पाद हि वरु पूं समुद्र कल
 गत्का य॥ पूर्व॥ काद॥
 अथादि॥ यत्नमानस्य लोम
 नथाव नाहन पूर्वी दि सम
 दु कल गार्वन कर्तु॥ उं
 त्वायमि॥ उं दवस्यत्वा॥ ॥
 उं क्षान समुद्राय॥ ॥ उं सम
 दार स्मि मधु मां उं उ दान
 इया ० समना ममृत्त ल्यमा
 न॥ यत्नस्य नाम गु र्क यद
 सि डि का देवता नाम मृ

तस्य नाति ॥ ददि ॥ हा का॥
 उं दधिसमुद्राय॥ उं समुद्रा
 यत्वा वाता यत्वा हा सति ना
 यत्वा वाता यत्वा हा अना वृ
 ध्या यत्वा वाता यत्वा हा य
 ति धृ श्वा यत्वा वाता यत्वा हा
 सि वि विष्णु यत्वा वाता यत्वा हा
 । अयसत्वा वाता यत्वा हा सि
 मिदा यत्वा वाता यत्वा हा ॥ प
 ज्विम ० यव ॥ उं सना कायन
 म॥ उं समुद्रा सि वि ० यवा
 अंश स क पाद ० हि न सि व
 का वाग सेन्यम सि ००॥ उं
 यत्वा यव ॥ उं ०० ० समुद्राय
 नम॥ उं समुद्र त्वामृ मना अ
 स्म न नृ यदा ०००० दि वा अ
 (मनु उं नृ यत्वा यत्वा नरु सि
 तस्मि वा ० समयाम् यत्वा म
 हि वा अ व र्द्ध ॥ ॥ ४ ॥ ००
 गित्वा न कल गार्वा वि वि ०॥

तता पूजा मृत्तिका ॥ ॐ श्रद्धा
 कर्म करवाय ॥ ॐ यज्ञ यज्ञ
 गच्छ यज्ञ यज्ञि गच्छ स्वायानि
 गच्छ स्वाहा ॥ नमो यज्ञ यज्ञ
 यज्ञ सहस्र कृवाक ॥ सर्व वी
 नस्तं इ वस्तु ॥ स्वाहा ॥ यज्ञ य
 ॥ ॐ विष्णु ननाटमसि ॥ यज्ञा
 दय ॥ ॐ वृक्ष नस्यते ॥ कस्य ॥
 ॐ नमः ॥ नमो वायव ॥ यज्ञ यज्ञ
 ॥ ॐ सययामिसमा यज्ञा यधी
 लि ॥ सभा यधी यानस ननस
 ॥ नयतीर्क्ष गणीती ॥ यज्ञ य
 ता ॥ स मधु मतिर्मधु मतिरि ॥
 यज्ञ यज्ञा ॥ यज्ञ मृता ॥ ॐ
 यय ॥ यज्ञ यज्ञि ॥ विहि ॥ ॐ
 वीह यज्ञ म ॥ यज्ञा ॥ ॐ या
 ॥ यज्ञा यधी पूर्वज्ञा नाद वस्तु
 क्ति यज्ञ यज्ञा ॥ म ननय यज्ञ
 ना सह ॥ गतिं यज्ञा निस फ
 य ॥ यज्ञि ॥ ॐ म नान्ति

४
 ॥ ॐ तिस्रानकल पूजा वि
 मि ॥ मधु यज्ञ मानस्वस्ति
 कासनन यज्ञि मा लिमख
 क्ति ता ॥ निर्मि ॥ ॐ न
 दा रुर्न ॥ ॐ अश्व वाचन ॥
 ॐ गज्ञा सि ॥ मग रु गालवान
 त्वा य ॥ स्वस्वमनु हा कत य ॥

पूर्ववत्स्वस्वमनु हा स्नान का
 ने ॥ ॐ रवे न स्नान का नय
 ॥ ॐ यो गाम्य नय नि निध
 य ॥ ॥ यज्ञ सिंहासना क
 ने यज्ञ गय ॥ तासा तावयन
 ॥ ॐ स्वस्ति नामीमी ॥ स्वस्ति
 कासनन यज्ञ मानस्वस्ति ॥ ॐ
 क (जनस्य) ॥ ॐ
 गज्ञमान रिता ननसाधन ॥
 ॐ र ॥ वृक्ष (स्वाहा) ॥ ॐ
 वृक्ष यज्ञान ॥ ॐ र ॥ वा वि
 शु व स्वाहा ॥ ॐ ॐ द विष्
 ॥ ॐ स ॥ महा द वाय स्वाहा

॥ ॐ नमः ४ गी रुवा यव ॥ ॥
ॐ ति गिरुय (गमधनी) ॥ ॥

रुमाननकल गमदिनव
गुहा या ४ सर्व देवगावर्ण
ॐ दमासनी दितय ॥ ॥
स्वस्वमकुल अर्थ कानय ॥
गखन धवि य ॥ रुमानम
॥ यरुमानन ॥ अथवालाह
॥ ॐ अथादि ॥ ॥ ॐ लाडय
दशु कसक म्या गायविष्ण
खन कगायका ग्यप (गगाय
क गिगाय अदित्या यश
नाधि देवगाय मध्य कृतमल
नाय पूर्व लि मुख कलाग्नि
क लि जे द (गगु वाय ॐ द
मध्य गि हो न स्वाहा ॥ वधू
क पृथ्वी स का गी न को त्य
ल सम यर ४ लोकना (थ
जगदीय ४ गम नि य कुरु
लास्क न ४ ॥ ॐ ति आदि
त्य अर्थ विवि ४ ॥ ॥

तत गम अर्थ ॥ ॐ वृ क वृ
वृ द गी गाताय कलि क
न कगाय अग्नि (गगायवे
गगायसा मायड माधि देव
गाय अय प्रत्यधि देवगा
मयदि गी ग्य नाय अर्थ वरु
मलु ला कृतय वि गलाग्नि
दक्षिण लि मुखाय दी नम
मूडा रु वाय ॐ द मध्य गि
हो न स्वाहा ॥ हिम गी खम
मला ल ४ का गपृथ्वी मया
पि वा ॥ गगं काला रि हीर
ली सदा गम नि यय क म ४ ॥
ॐ गि सा सार्ध ४ ॥ ॥
रुल्लु ल्लु ल्लु क वृ द म म्या अ
गाय वृ वी वारु न क गायला
न द्वा उ (गगाय क वि आनय
अ गम नाय क नाय कि नि यः
अधि देवगाय दक्षिण दिग
गी ग्य नाय पि का ल न लु ला क
नय (दक्षिण लि मुखाय वृ म

कलनिमधुदः ॥ १ ॥ इवाः
य ॐ दमर्धं गृहा न स्वाः
हा ॥ धनगी मर्धं स र नाव
धू ॥ व स म य र ॥ १ ॥ ॥
निददातु वा नित्यं कुमाना
गोनक ॥ १ ॥ सदा ॥ ॐ ति अं ग
ना ध ॥ १ ॥

वेणुकु वृद्धा दस्या भूगापध
न पुनरु स्रय अरि ॥ १ ॥ ग
य वे ग्य शाग य व ध य नाः
नाय नाय विष्णु य त्रि वि दे
व नाय ॐ ॥ १ ॥ न दि गी श्व नाय
ध न ना क ति म ल ला य ड रु
ना रि म र वा य ज ० ना जि म
ध द द ॥ १ ॥ इ वा य ॐ द म र्ध
गृ हा न स्वा हा ॥ १ ॥ ना रि नी ग
इ स र द ग ॥ क लु कान द यं ले
र ॥ १ ॥ सा म य र म हा ग शा व
ध ॥ १ ॥ ग र्नि य य ड रु ॥ ॐ ति
व धा य अ र्ध ॥ १ ॥ ॥

कालिक कृष्ण काद ग्य शाग

य ड रु न र्धं र ना धी न रु
गा य नि ना ॥ १ ॥ ग गाय विष्णु
शाग य वृ ह स्य त्र य व द्म ल
ॐ ड य त्र वि दे व ना य ड
रु ना दि गी श्व ना य य द्म कृ
ति म ल ला य ड रु ना रि मः
र वा य नि र वा मि सि ध द ॥ १ ॥
इ वा य ॐ द म र्ध गृ हा
न स्वा हा ॥ १ ॥ सा ग सि व ली क
ली का का न ॥ १ ॥ ग र्मा य १ ॥
दा वि रु ॥ १ ॥ द व म कु म हा ग
शा ग रु ॥ १ ॥ ग र्नि य य ड रु ॥
ॐ ति वृ ह स्य त्र य र्ध ॥ १ ॥ ॥

वेणुकु न व र्मा शाग यः
वृ ध न र्ध गाय रा ग व ॥ १ ॥
गा य वा क न शाग यं गु का य
ग का य ग वी डी य त्र वि दे व
ना य वृ र्ध दि गी श्व ना य व रु
न रु म ल ला क र य हा र का
मि र ग ग व र द र्मा इ वा य
ॐ द म र्ध गृ हा न स्वा हा ॥

सां॥ कां॥ के॥ न॥ न॥ कां॥
४ सु॥ क॥ व॥ न॥ वि॥ त॥ व॥ ह॥ ४॥ ४॥
नि॥ द॥ दा॥ तु॥ वा॥ नि॥ त॥ प॥ द॥ ए॥ म॥ नी॥
स॥ र्ग॥ र्ग॥ व॥ ४॥ ॐ॥ ति॥ शु॥ क्रा॥ र्घ॥ वि॥
वि॥ ४॥

मा॥ र्घ॥ शु॥ क्रा॥ र्घ॥ म्या॥ शु॥ ना॥ य॥ ना॥
हि॥ ली॥ न॥ के॥ ग॥ य॥ का॥ श्व॥ य॥ (ग॥
ग॥ य॥ शु॥ ड॥ ग॥ य॥ ग॥ नि॥ श्व॥ ना॥
य॥ य॥ मा॥ य॥ वा॥ ग॥ य॥ त॥ य॥ वि॥ दे॥ व॥
ता॥ य॥ य॥ नि॥ म॥ दि॥ गी॥ श्व॥ ना॥
य॥ मा॥ न॥ वा॥ कृ॥ ति॥ म॥ तु॥ ला॥ य॥ य॥
नि॥ मा॥ ति॥ म॥ र्वा॥ य॥ म॥ हा॥ ग॥ श॥
नि॥ सी॥ ना॥ तु॥ द॥ (ग॥ र्ग॥ वा॥ य॥ ॐ॥
द॥ म॥ र्घ॥ ग॥ हा॥ न॥ स्वा॥ हा॥ ॥ सां॥
ग॥ नी॥ ला॥ त्य॥ ल॥ द॥ ल॥ श्व॥ मा॥
लि॥ ना॥ न॥ स॥ मा॥ वि॥ वा॥ न॥ न॥ श्व॥
न॥ ग॥ ह॥ ४॥ र्ग॥ स॥ मि॥ हा॥ ग॥ नि॥
य॥ य॥ कृ॥ ४॥ ॐ॥ ति॥ ग॥ न॥ श्व॥ ना॥
र्घ॥ वि॥ वि॥ ४॥

कार्त्तिक॥ क॥ य॥ र्ग॥ मा॥ य॥ ग॥ ना॥ य॥
र॥ न॥ नी॥ न॥ क॥ ग॥ य॥ वा॥ शी॥ न॥

(ग॥ ग॥ य॥ शु॥ ड॥ ग॥ य॥ ना॥ ह॥ व॥ क॥
ला॥ य॥ स॥ र्ग॥ य॥ त॥ य॥ वि॥ दे॥ वा॥ य॥ न॥ र्ग॥
त्य॥ दि॥ गी॥ श्व॥ ना॥ य॥ म॥ क॥ ना॥ कृ॥ ति॥
म॥ तु॥ ला॥ य॥ य॥ नि॥ मा॥ ति॥ म॥ र्वा॥
य॥ नो॥ दा॥ ग्नि॥ म॥ ल॥ या॥ ह॥ वा॥ य॥ ॐ॥
द॥ म॥ र्घ॥ ग॥ हा॥ न॥ स्वा॥ हा॥ ॥ सां॥
॥ अ॥ ग॥ जी॥ य॥ र्ग॥ स॥ का॥ सा॥ नी॥ ल॥
न॥ नि॥ त॥ ४॥ स॥ दा॥ (ग॥ नि॥ द॥
दा॥ तु॥ वा॥ नि॥ त॥ प॥ द॥ ए॥ म॥ नी॥
र्दन॥ ४॥ ॐ॥ ति॥ ना॥ द॥ र्घ॥ वि॥ वि॥ ४॥

मा॥ र्घ॥ कृ॥ बु॥ द्वि॥ ती॥ या॥ शा॥ ना॥ य॥
अ॥ (श्व॥ न॥ क॥ ग॥ य॥ ग॥ म॥ नि॥ (ग॥
ग॥ य॥ शु॥ ड॥ ग॥ य॥ ग॥ क॥ र्ग॥ व॥ वि॥
गु॥ शु॥ का॥ य॥ व॥ क्रा॥ य॥ त॥ य॥ वि॥ दे॥ व॥
ना॥ य॥ वा॥ य॥ र्ग॥ दि॥ नी॥ श्व॥ ना॥ य॥
र॥ वा॥ ना॥ कृ॥ ति॥ म॥ तु॥ ला॥ य॥ य॥ नि॥
मा॥ ति॥ म॥ र्वा॥ य॥ नो॥ दा॥ ग्नि॥ य॥
य॥ व॥ ना॥ ह॥ वा॥ य॥ ॐ॥ द॥ म॥ र्घ॥
ग॥ हा॥ न॥ स्वा॥ हा॥ ॥ सां॥ य॥ ॥
सि॥ द्र॥ न॥ न॥ वि॥ ना॥ का॥ ना॥ न॥ त्र॥

पद्मनिशयिव। करवानक
नेश। (गम४सदागमनियुः
कुरु४॥००॥ कुरु अर्थ॥

गमनसुगमनाहुवायस्व
वलागागायस्वसि काकुरः
य। (गमवक्ष्यि००॥ गमनय
गि माति मूखाय। गमने
सकथय। दिनय। यथवि
देवगाय००॥ दमर्ष गृहल
स्वाहा॥ ॥००॥ ति गम अर्थवि
वि४॥ ॥

गमामृष्ययकलगास अ
र्थयावकुरु सिनइना॥ ॥
गमयगिकाग अर्थयावकुरु
मयनिइना॥ ॥ ॥

उर्वचन्दनसिद्धनयव्यधूप
दायविपसकलसु नव
ग्रहं थादद०॥ ॥००॥ ति गवा
कसुमसंकाग॥१०॥ मिति
सर्वे वास्वस्वस्वाहा॥ ॥

यह सिंहासनाह०॥ अष्ट
विनंती विदुः॥ अर्थविप॥
॥ अथादि॥ गुरुमर्ष॥ सुवर्ष॥
॥ अष्टस्वामामुनि॥ गुरुध
मदिवर्जसंयद॥ गृहलार्थ
मयादर्लमायुकी लि युदार
व४॥ १॥ मनिक॥ उर्वल गृह
वदार्थगदलकी नामपूनिर्
। गार्तिक नाहुमलकी वृद्धि
भक्तसदामम४॥ २॥ अहा॥ वा
सायवर्षिये धूपि विप्राय
ज्ञानसिद्धव॥ दीयमानमि
दचाय्य गृहीत्वा रूलदार
व४॥ ३॥ पुल॥ ॥ इनुमर्ष
सुवागाययनदवर्षदनायव
। अर्थकिसेमयादर्ल विवि
नामक नाहुव४॥ ४॥ मनि
क॥ विरीषधमहावीचल
कगनायवविप॥ गृहलार्थ
दव॥ दुरुर्षि ममयावदुमा
व४॥ ५॥ नील॥ कयायव

कनूपायधर्मधनद्विनायव
 लुप्यदलायमनिर्णयगुवृ
 द्विप्रदाराव॥७॥ वेदार्थान्
 सिपनगुनामायमन्वार्थ
 वप्रदीयान्विष्टवकुवनन
 यकामार्थसिद्धिदाराव॥१॥
 वडा॥ मार्क (लुप्यमनि (ब्रह्म
 स्वर्गवासकलप्रद। अर्थग
 हागमदरु नमगमेसखी
 लव॥२॥ अग्न्यादि ॥ ॥
 ॐ ति अ ब्रविर्नक्तिविया अ
 र्थे नुवचननसिद्धयक्षाय
 वीतप्रथमप्रदीययर्थनवि
 नक्तिविश्वदद॥ कलकलक
 पदीयविय॥ ॥
 वनविष्टसवाकमाद अर्थ॥
 ॐ सा मायकी नसमडागवा
 र्थ्यादि॥ कलज्जदिऊपका
 ७४॥ गद्यपद्यादिस्वस्वमकु
 लकारं॥ यथाजीनत्यादि॥
 ॐ नमो अग्न्यादि ॥ धूपधूप

नवाय धायादि ॥ ३

सदासितप्रियसदाग्रीख
 लुदङ्गहवि॥ अर्थका अ
 नर्वयप्रथमनिर्णयग्रीन
 त्रवानपुन। यमसंस्तिग्न्या
 मवर्त्तहनिर्णय॥ ४॥ कन
 लासगा। डाधायार्थसूनिमा
 मिसगर्गयथीमयासूक्तिय
 ७॥१॥ मासीधूपकमृदमा
 षसहिर्गयकात्रसलुष्टक
 । युद्धा (जवरवृत्तनतमति
 कवेग्नाननामूलिय॥ नाजी
 वासनतलहस्तमरुमकुष्ट
 धुति कोसुर्म। दानेयप्रस
 वन्दनप्रियतान्वन्दसदा
 हं वलि ॥ ३॥ पीतांशुकमल
 सनस्तवनद॥ कलप्रदानपि
 य॥ हस्तप्रस्तकलासगादधु
 नानीवानमन्नवलि। धूपस
 र्दनसंस्वीनविमलकपूर्व
 नसज्जिदिगीवदात्यासना
 स्रग्भस्तुयधिर्गवाससदा

गानम ॥ ३ ॥ पा (लो) पलु वन का
 नागन विन सितु वृम लीरु ल
 धूप गु मुर क कम रि म क न
 प्रा वाल ल्या (म घट) अ क म
 रि वि ग लु की रि व ल वान ना
 म स्य वा व ४ पदी धी मा (गे) नि नि
 ना ग न सि न य र्ग नो मी रु वा
 या स र्ग ॥ ४ ॥ म दा ला व न मा
 स र्ग ग नि न गे म् रि रि लाला
 रु क दा न वा म न य क ग स न
 स मि द लु ग य ४ क क म ४ रु रु
 स स्य ग दा गि वी र्थ नि न द ४ पा
 ल स्य व ग य रि ४ सा र्थ य लु वि
 री व ग स्य व न (लो) त से न मा
 नि र्ग ॥ ५ ॥ शु क्रा (गी) रु नि र्ग
 शु ज न व न द वा य गु न नी ल
 र्क ॥ धृ वृ क व न दा नु दे व रि
 ल क वा का ग म् रि रि था ॥ त्या
 ग म स्य म् ग गु री सून न र्ग
 अ म् ना र्ग र्ग र्ग ॥ लो का ना
 उ रि गी य क न न य र्ग ॥ ६ ॥

दि १

व म ह क र्प ॥ ७ ॥ शु द्वा न न स दा
 स प र्प र्प द वे द्वा र्ग र्ग नि र्ग
 (म) रि रि वृ म य ४ स व लु न
 वि र्ग र्ग य दान र्ग र्ग ॥ स्या
 त्वा (लो) प र्ग र्ग य रु स व न द य
 (के) न रु स र्ग र्ग ॥ नो मी रु गी
 य न लु ना म वि र्ग वि श्या वि र्ग
 र्ग ॥ ८ ॥ इ र्वा ही न र्ग र्ग स म ग
 क न गी र्ग र्ग र्ग मूल र्ग
 रु रु रु र्ग व न म नी रु क र्ग
 ल वि र्ग स्य म् र्ग र्ग र्ग र्ग र्ग
 ना रि र्ग कान र्ग स र्ग ग वा न रु
 प रु म् मा म् र्ग र्ग स र्ग र्ग र्ग
 ल स र्ग र्ग र्ग र्ग र्ग र्ग (लो) य
 द र्ग र्ग म ॥ ९ ॥ ०० रि रु र्ग र्ग
 र्ग रि रि रि र्ग ॥ अ र्ग र्ग र्ग र्ग
 म लु ल वि स र्ग र्ग ॥ ॥

य रु र्ग र्ग र्ग र्ग र्ग र्ग र्ग
 मा न अ र्ग र्ग र्ग र्ग र्ग र्ग
 र्ग र्ग ॥ ॥ म ग र्ग र्ग र्ग

ना ३

५५

३१.

कन थस द काया ॥ ॥

मिसा याव ॥ ॐ पूज्य द हासु

गानार्थ ४ क विदा नाह नि यान

थं । न । थ सूर्य सूर्य रुद नि सा

नानी दि ब्य नू पिनी ॥ यन थस

माना ह रु दा पा प युग सति ।

अस्म ना रि ४ सदा न्नान नर्

तिय रु कि न न ४ ॥ थं स माना

हृत्पा दि ॥ ॥ यज्ञ मान स्व

स्तिक सब साव कं ॥ कत न्न कं

॥ ॐ गी मन था धिय क य सूर्या

य ॐ द मा स न २ ॥ यथ नि म ४ ॥

नर्व वा क न व न न सि नू न य

श प वी त पृ थ धू व दा य ॥ अथ

विय क ॥ स र व स इ इ त स्य ॥ ॐ

य ॐ वा ला रु क ल्य ॥ ॐ अथा दि ॥

यज्ञ मान स्व गी मन था व ना ह

न नि मि त्थ थ ॐ द म र्थ गृ हा

न स्वा हा ॥ ॐ ग र व की ना म्बू प

थानि न त्ता नि वि वि ध नि व र्णा

म न थ नु सै द्रा क नि द म र्ध न

मान म ४ स र व न म स्का न ॥ ॥

का ग ॥ ॐ स क स क ति व र्था ति मा

स स क दि ना नि वा त सि न्नी म

न । थ म मा म स र्व या प पु नो ज न

४ ॥ ॥ न का म्बू जा स म म । ज थ

गु । ले क सि न्धू रा न स म रु क

गा मि वि र्थ र जा मि । य अ द्र या

र यु क र्द ध र्थ क क डे म्मा नि

क भो लि म ल र्ध न वि न्नि नि न

॥ अ ग म्बू दि ॥ ॥ थ न सूर्य

यु द द्य वि या व क ॥ दी का म

ला क सो ग या ॥ लि या व क ॥

॥ गृ हा द दि वा त य क ॥ अथ

त्वा मा दि न थ स र्द दि वा त य

क ॥ ॥ न व गृ हा दि अथ क्वा

मा दि वि स र्द न ॥ ग ता दान

क या ॥ ॥

अग्नि क लु द दि । य यज्ञ मान

प धि मा रि म्बू न वा क न पृ

वा रि म्बू न दान ॥ न व गृ हा

दि । अथ क्वा मा दि दान वि य

॥ ॥ ज्ञाति धान्य मयं या
 र्ण निन द्य ग र्ण संपूत ४ अ
 दि त्र वि य म ग र्ण य म र व
 ति ज्ञानि क ४ ॥ ॐ अ य वा ला
 ह ॥ ॐ अ य आ दि ॥ य ज मा न स्य
 ली म न थ व न ॥ ह व ज्ञा य क
 म ना थ ॥ श श व दाय ध्या पि न
 ॥ ॥ का दा ॥ ॥ द कि म ॥ ॥ अ
 सी र्वा द ॥ ॥ ॐ ज्ञा त द ज क लि
 ग का ण्य प क ल मृ द वि ज्ञा
 षा नि त स क म्या म वि य स र
 ज्नि क पि ल गृ ह्ण नि पू ज
 क र्ति ॥ दानं धनं सु धू य क
 धू ल व लि द यं ह वि क र्ति यं
 म धू य कं ज वृ ल म धू ल ग
 र्ण नो मी स दा ग र्क ल ॥ ॥
 आ दि त्र या दान ४ ॥ ॥

[illegible]

ॐ गायत्री नमः ॥ यद्विद्यया
विदेव गायत्री नमः ॥ यद्विद्यया
॥ यद्विद्यया नमः ॥ यद्विद्यया ॥

[illegible]

ॐ वृहस्पतये नमः ॥ (मन्त्रः)
 प्रत्यक्षि देवाय नमः ॥ दमासनी
 नमः ॥ यद्यनमः ॥ (मन्त्रः)
 नदनयीता कर्तुं ति ॥ ॥
 यीत वसु यर्गयस्मा द्वास्त्र
 दवस्यत्तत् ॥ यदो नात्तस्य
 मविष्णुनत ॥ अन्ति ययन्म
 ॥ ॥ ॐ श्रीतिर्यस्य चृताक
 तनजिवित्तिधूपं जवाना
 वलिं दत्तमिधूतस्त्रागु ॥
 लूनय (गवर्तु वन्द्यं सदा ॥
 सीमयं कर्तुं यस्या गह्वं
 वृक्षा विदवदिगं सा विद्यु

उवृहस्पतमखमुखेनोमि
सदाहं गुर्न ॥ १ ॥ वृहस्पति
यादान ॥

ॐ शुक्राय शक्राय शवीन्दी
यस्य धिदेवताय ॐ दमास
नं २ ॥ श्रीखलुयलुन (१५)
तादागति ॥ वाक् ॥ ॐ विष्णुस्य
मन्त्रं नृपासिपुस्मादमृतं
रुवशचडाकेवाहनानिर्ण
मा १ ॥ नित्यमय ॥ ॥

ॐ यथाविल्लरुहात काग्नि
नवमीदयधृता नवलिंद
॥ १ ॥ रुगवत सज्ञानवमीष
त्वाधूदद ॥ दानं वा ॥ यम
नमुखकनद्विदं ॥ शुक्रं वृज
काधिवेदानीग्रहपुत्रम
लुलगां यथाभिषेकाय
ली ॥ ६ ॥ शुक्रयादानविधि ॥

ॐ गतिश्च नाययमायकापु
त्यधिदेवताय ॐ दमास नं २

॥ ॥ कलु निवन्दनरु निगा
कगति ॥ वाक् ॥ ॐ गवामि (गु)
षतिषू नितुवनानि वतुद
॥ १ ॥ यस्मात्तस्माद्विर्ममस्या
दिरुलाकयनगुव ॥ यस्मात्त
यथिवीसवम ॥ यनृकशवस
निवासववापहना ॥ यवस
स्मात्तानि ययवम ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ शुक्रकाययसं रुवायम
विधि ॥ सो नायु नाहि ध्य ॥ ॥
यं वागुनृदवमनृक गुर्लगा
गग्निशायल्लरी ॥ दीर्घवाक
तियष्टि ॥ म ॥ नियया ॥ ॥ ॥
ति यत्यधिर्द्विर्वायुवन
यदकजनमानिर्णमख
॥ १ ॥ यद ॥ ॥ ॥ ॥ गनिश्चलदा
नविधि ॥

ॐ नाहवेका नायस्यैव
त्यधिदेवताय ॐ दमास नं
२ ॥ ॥ शुक्र लिदन्दनरु
प्रादति ॥ वाक् ॥ यस्माद ॥ ॥

वि कर्मा विगवा धीनानि सु
 वीत ४। रव ई ली ला दी नि
 तस्मा क्कानि प्रय क्कम ॥ १॥
 उं यस्या दूर्नु निरुन्म मृ क्कग्न
 वीया णन मन या क्क वं धूय
 मद क्कगसन मधूयर्त प्रीना
 तिमा भादन र्पा गी या य सना
 क्क का नम विध प्रया विधौ
 गुं तु र्गम किं का नय या हि
 यरु मधूना (गो) डा क्क वं मंग
 ल ॥ ८ ॥ उं ति ना क्क या दान ॥

उं क्तव विरु गु का पव क्काय
 य वि देवता य उं दमा सन २
 ॥ वि विरु वन्दन वि विरु क्कगति
 ॥ वा क्का ॥ उं यस्मा त्सि सर्व यरु
 नामि ई त्वे नय व हि ४। मान
 विरु वसा विरु मग ४ गम कि प्र
 य क्कम ॥ उं जन्म यवर्तम वृमी
 न्द दिव (ग) (ग) गुं तु ज्ञा म
 न ४। क्क क्क क्क क्क क्क क्क

नम उं ति विरु विरु क्का पदी
 यस्म ना ड क्कगन न चूत मर्त
 विरु क्क धूय दह विरु म्म वलि
 क्का गदान म्म दिता ग्गानि यय
 वि क्क ॥ ८ ॥ उं ति क्क क्क या दान
 न वि वि ४ ॥

उं जन्म न स क्क म्म विरु ति न
 धू ग क्क विरु वि देवता य उं द
 मा सन नम ४ ॥ श्री रव लुच न्द
 न (ग) क्क गति ॥ वा क्का ॥ उं
 यस्मा दग्ग न्म यूर्त क्क ग व
 स्य नि व स्य वा ग्ग यो म मा य
 ग्ग क्का सु द क्का जन्म निरु म्म
 नि ॥ १॥ उं द वं जन्म सु नी
 ति मा दि द ह न य त्या विरु क्का
 य द दान व स म न क्क न ल
 वि वि वा ग्ग यो दि द म्म ग वा
 व र्थ सार्क सु धूय म न व ल
 ति ४ ॥ ग्ग विरु वलि र्ग श
 ती सु र्ग ह ना जि म्म क्क म्म नी
 मि सदा सानि क्क ॥ उं ति जन्म

नमास्तुत ॥ १ ॥ ॥ ॥
 वृत्तिश्च स्वकामादानविधिः ॥

गणवलिदानं ॥ यिका ॥ ॐ व
 लिम्बुयिडा क्क ह्यय वृद्धम
 सननमः ॥ पृथ्वी नमः ॥ प
 भका वृवन्दन कृष्ण यज्ञाय
 वीरानूयक जल पृथ्वी नमः ॥
 कृष्ण दत्त वाक् ॥ ॐ पृथ्वी
 कृष्ण लोचन लक्ष्मी वासासुख
 प्रद ॥ पृथ्वी लीक प्रदानेन की
 र्तिमण्युय कृष्ण ॥ नगत्पृथ्वी
 लीक दान दानार्थ ददस्व ॥
 कृष्ण हर्मल ॥ ॐ अथादि ॥ य
 जमानस्य कि पृथ्वी लीक दान
 कृत्यमर्हसि प्रदद ॥ स्वर्णि ॥ ॐ
 कादा कृष्ण ॥ सिद्धो धृवी हि
 दुर्दिष्टो अजीवी द ॥ ॐ मर्ह
 दो ॥ स्मरु ॥ ॐ मांसी धृव कम्
 मे माषसहितं पक्वान्तरु

सूक्तं यद्वा (ग) यद्वा दत्तं नृत्तं
मनिकर्तुं (उ) न नो मूर्ति य
ना क्रिया स न नृत्तं रुद्र मरु
यं कृष्णं त्रिं को सुर्मदानय
द्र सवन्दन प्रियतनं वन्दे सदा
तं वलिं ॥ यथावानेति ॥ अङ्ग
ध्यादि ॥ ॥ ॐ ति वलिदा
नं विधि ॥ २ ॥

गंगायाः सदानं ॥ अकृतं ॥ ॐ ध्या
समूर्ति यद्वा कृष्णं यद्वा दमा
सर्ननमः ॥ पूर्य नमः ॥ क
प्यं नयन्दनपीतयद्वा यवी
तः गङ्गातीर्थं नमः ॥ कृष्ण
रुद्रं ॥ वाक् ॥ ॐ वन्दन विधु
तं निर्यधुं गङ्गा विनागर्न
गङ्गा द्वा प्रदानेन जयं रव
ति सर्वदा ॥ नृत्तया सदानदा
तयं ददस्व ॥ कृष्णराम ॥ अथा
दि ॥ यज्ञमानस्य वा सदानसं
प्रदद ॥ ॐ स्वस्ति ॥ ॐ कादा
त ॥ दत्तात्रि ॥ दक्षिण ॥ अ

जीवादि ॥ ॐ यस्या कृष्ण ॥ स्म
तु ॥ ॐ ध्यातां (ग) क मलया
दि ॥ अङ्ग ध्यादि ॥ ॐ ति वा
सदान विधि ॥ ३ ॥

तत्तत्तु नृमानदानं ॥ कनकु
नि ॥ ॐ रुद्रमानमूर्ति यद्वा
दमासर्ननमः ॥ पूर्य नमः ॥
कृष्णं कृष्णं नयन्दन कृष्णं यवी
त ॥ कर्तुं ० पूर्य नमः ॥ क
गङ्गा द्वा कृष्णं ॥ ॐ दवानाम्
लि कृष्णं मूर्ति देवी सुर्म
गर्तुं सर्वतीर्थं मयं निर्यदानं
नृत्तदातुव ॥ नृत्तं नृमान
दानदातुं ददस्व ॥ कृष्णराम
स ॥ अथादि ॥ यज्ञमानस्य रुद्र
मानदानसं प्रदद ॥ स्वस्ति ॥
ॐ कादातु ॥ कृष्णं तु लिवादि
॥ दक्षिण ॥ अङ्गीवादि ॥ ॐ
तीव्रान्धावा ॥ स्मृत ॥ ॐ वाक्

पुनर्वनक त्यादि ॥ अश्वगन्धादि ॥
॥ ५ ॥ ॐ ति ह न मान दान विधि ॥

गंगा विलीषण ॥ म्वातृप्रीति ॥
ॐ विलीषण मूर्त्यै वाक्मना
य ॐ द मासर्तनमः ॥ वृष्य
नमः ॥ (ग) नावन्दन पीतय
झाषवीत ॥ सुवर्तु यूपि पृथ
नमः ॥ ॥ कृष्ण कावाक् ॥
ॐ वामर्तनत्तसं कर्म ह म द
ॐ समर्तनत्त वामर्तनत्त
ननत्त वायुवृद्धि कर्तु म ॥
गत्त विलीषण दान दान वीदद
त्त ॥ कृष्ण ह म ॥ ॐ अश्वगन्धादि ॥
रुमानस्य विलीषण दान ॐ
त्यमर्तनत्त वृद्धि ॥ सुक्ति ॥
ॐ कादात कर्मा ॥ कालमाष
प्रीति याते ॥ दक्षिणा ॥ अग्नी
वीदा ॐ न कर्मात्ता (ग) मर्ति ॥
स्तार ॥ ॐ मर्तनत्त वन मर्तन

दि ॥ अश्वगन्धादि ॥ ५ ॥ ॥
ॐ ति विलीषण दान ॥ ॥

गंगा क वा दान ॥ मासप्रीति ॥
॥ ॐ कृष्ण मूर्त्यै वाक्मना
य ॐ द मासर्तनमः ॥ वृष्य
मः ॥ ॥ देवदा नृवन्दन ॥
तादात यद्वा पवीत ॥ कृष्ण क
र्तवाक् ॥ ॐ कृष्ण नृय मर्त्य
नमर्तनत्त नृत्त सं कर्ति ॥ म
त्त दान न मर्तनत्त (ग) नृय
र्ति प्रयच्छु ॥ मासप्रीति द
क्षिणा ॥ अग्नी वीदा ॥ ॐ अश्व
सह ॥ स्तार ॥ ॐ शुक्ल (ग) हनि
ति ॥ अश्वगन्धादि ॥ ॥ ॥
ॐ ति कृष्ण दान विधि ॥ ॥

गंगा पुनर्वन नाम दान ॥ म
गव्रीति ॥ ॐ पुनर्वन नाम म
र्त्यै वाक्मना य ॐ द मा

सननमः॥ प्रथमनमः॥ गन्ध
 वन्दननील यक्षाय वी॥ श्री
 प्रथमनमः॥ कृष्णकृत॥ वा
 क्य॥ ॐ नत निमित्तकृ
 तस्वर्गदत्त मयनरुद्र
 गुणाननमदव सर्वलक्ष्मी
 क्षिना रुवः॥ गुणदयनः
 नामदानदातव्यदेदस्व
 हासु॥ यज्ञमानस्यपनः
 नामदानरुद्रमहर्षि
 दद॥ स्वस्ति॥ कादात॥ श्री
 वादि॥ ॐ प्रज्ञायतां॥ सागु
 लुक्ता ननसदासुप्रथम
 दि॥ अगुगन्धदि॥ ॥ ॥
 ॐ नित्यनः नामदानविधिः॥

तामाकर्ष्य (लु) यदानी॥
 तस्मात्वादि॥ ॥ ॐ मार्क
 (लु) यमूर्ति यत्राक्षय ॐ दम
 सननमः॥ प्रथमनमः॥ मने
 नीलवन्दन (लु) यक्षाय वी

त॥ यद्यप्रथमनमः॥
 कृष्णकृत॥ वाक्य॥ ॐ दक्षि
 णवर्तनी र्वतां हने हस्तसं
 स्मितां। श्रीनादमथना इतं द
 त्वामं ग्रीयदा रुवः॥ यववीहि
 ॥ गुणत्यनः नामदानरुद्रः
 महर्षिप्रददस्वस्ति॥ ॐ कादा
 त॥ दक्षिणाविय॥ आनीवी
 दे॥ ॐ सफः प्रययति हिता
 ॥ सागु॥ ॐ दूषादिनरुद्रसंम
 तिअगुगन्धदि॥ ॥ ॥ ॐ निज
 ज्यत्कामादिदानविधिः॥

तामाकर्ष्य विन्दुदानविधिः॥
 ॐ सामागमूर्ति यत्राक्षयः
 ॐ दमासननमः॥ प्रथमनमः
 ॥ श्रीस्वर्गवन्दन (लु) यक्षाय
 वीत प्रथमनमः॥ कृष्णकृत
 त॥ वाक्य॥ ॐ नरुद्रवदित
 वन्दविन्दुविम्बानुमानं रिम
 धपनि पूर्वकां जयाशक्त

ॐ। गी। गुरु सुमसह सुवा र्द्ध
 दव ह गुरु न मि इ नित मि
 नूय न वि म्ब ददा ति॥ गुरु व न
 वि म्ब दान दा ग र्थ॥ ॐ द द स्य॥
 क ग ह म स ल ग ल॥ ॐ अ या दि
 ॥ य रू मा न स्य गी म न थ व न
 ह न नि मि त्थ र्थ अ मू क स म
 ग म्भ (ग) वा क्क स य व उ वि
 म्ब दान नु र्थ म ह स प्र द द॥
 ॐ स सि॥ ॐ का दा तु क स्मा दा तु
 ॥ द कि स वि य॥ अ गी वी द॥
 ॐ ॐ म न द वा॥ ॥ सा गु॥ ॐ
 द धि र्ग र व तु र वा ना र्ग दी ना
 दा र्ग व र्ग र व॥ न मा मि न नि
 न द र्ग गी ग म्भ क ट र व र्ग
 ॥ अ ग ग म्भ दि॥ व न वि म्ब द
 ना॥
 त ग न थ दान र्क र्थ॥ ॥
 य क लि का ल स प्र ना हि त ह
 र्थ वि म्ब स हि त न थ य न॥ ॥

ॐ य रू व दाय रान दारु त्वा दि॥
 ॐ द मा स न न म म्भ॥ धू र्द दी या
 वा क्क॥ क ग म्भ क ट र॥ ॐ
 ग रू र्थ स का स र्थ र्थ दि नू द
 न ग १। क टिल क रू ली प र्थ स
 र्थ न का मा नु य य क्क म॥ ॥
 य रू मा न स्य गी म न थ व न
 नार्थ मि द रि म धू य नि पू र्ण
 स र्थ वि म्ब स हि त द व इ त्थ न
 स रू य न थ दान दा ग र्थ॥ ॐ द
 द स्य॥ अ य वा ला ह क र्थ॥ ॐ
 अ या दि॥ य रू मा न स्य गी म न थ
 व नार्थ र्थ अ म्भ (ग) गाय त्वा
 दि॥ द व इ त्थ न स म्भ र्थ न थ द
 नु र्थ म ह स प्र द द॥ ॐ स सि
 ॥ ॐ का दा तु क स्मा तु॥ द कि स
 ॥ अ गी वी द॥ ॥ ॐ उ इ र्थ
 ग॥ ॥ सा गु॥ ॐ द वा स न र्थ
 ग म्भ र्थ ग म्भ र्थ य तु नू य वा ना
 म नि न त्त म र्थ दि य १ स र्थ ली

कालराविग ४। सहस्रादित्य
 संका ७४ स्वर्गता नमः ॥ १॥
 तिग ४। सहस्र पत्रेथ दानेन दि
 व्यला क म वा प्रया ७ ॥ यज्ञमा
 नस्यती म न था व नो रु नाथ
 नथ दान वि (को त सर्व दि
 धिय नि पूर्य नमः ॥ ॐ ति न
 थ दाने ॥ ॥ तं मृ (युं दय
 या गा यु सा दान या य धन ॥
 वाक् ॥ ॐ याल (सि सर्व रू गा
 ना या व द रु वृ व कि ता सा
 द वि (ध नू दू यं ६। म म वा य द्य
 या रु रु ४॥ दि व (ध द दि ६
 ॥ अणी वृ दि ॥ ॐ ति सा दा
 न वि धि ४॥ ॥ ॥
 तं न थ रा गा या य ॥ धन ति
 पि न य न न ग लं वा य रु म रु
 पं वा स्व ठालं वा दं य कं द
 व रा यं थ न द द नी सृ र्ग
 माल का द व रा य ड यं डा वा

मल ॥ ग रु नी न मा ला द रं वा
 दारु ल खान हा ला द पि त्त प
 नं दं य कं ॥ स र्वा दि वा द्य ॥
 वा क्क (६ स्व सि वा व र्ण य १०॥
 ॐ स्व सि ना मि मी ता ॥ ॥
 लि हा डा या व पि खा ल व स
 लं सा या व इ का य ॥ ॥
 ॐ ति न थ रा गा या द ना ॥ १०॥
 ॥
 य रु सिं हा स ना रु न य र्ग मा
 न रु का य ॥ ॥ य थ श कि
 स र्वा दू ति ॥ ना रा द न र्ग र्ग
 मान ॥ ॐ पु न त्ता दि ॥ य र्ग मा
 न रु का य ॥ आ वा र्ग ॥ ति ला रु
 ति दि य ॥ ॥ द श पा ठि ॥
 श नि क पु षि क ॥ वा क्क
 न पू र्ग ॥ य व थ न्या ॥ व ति
 प्र दाने ॥ दृ त दी प वृ ति का रु
 मं ॥ प्रा य वि रु द मी ॥ व ति
 रु न र्ग ॥ द व द दि सा वा

कृ. वदति ॥ संभुव घृणयाज
 नीयाय कं ॥ उं समिषियान ॥
 यलीगारो व कं का नं ॥ ॥
 गा ४ सं पूरु दृति कानय ॥
 उं यजमानस्य लीमन थावश
 ह नयदू सं पूरु दृति समुद्र
 रुमसु ॥ उं दं वागम रुवि ॥ संव
 दिनका ॥ ॥ अरसा ॥ ॥
 सागु ॥ अग्नि आजी वदि ॥ क
 लज्मदि आजी वदि ॥ मलुल
 सुयुथे रमर्ण ॥ उं यस्य कः
 मर्मा ॥ ॥ वक्रा प्रलीगविस
 र्कन ॥ लसम एति न कं कान
 यं ॥ ॥ कलज्मविस र्कन ॥
 अरिषं कं कानय ॥ ॥
 वक्रनादि सगु एमजी वदि
 यं यमृगु काविय सकल र्क ॥
 मरु आनति य तिसु ॥ उं म
 मर्दुति ॥ ॥ प्रतिष्ठा ॥
 यरु विस र्कन ॥ ॥ सूर्यसा

दि थय ॥ इक विय ॥ यिहा
 दयाव थव थव ०० वृदव
 नादिशाय ॥ ॥ ० ॥ वालिरु
 गा को मानी (गमग्रसंभय ॥
 ०० ति लीमन थावनाहलः
 स्वल्प यरु विधि सं पूरु स
 माक ४ ॥ गुरु ॥ ॥
 संभुग ००७ अं व लकृ पू
 अमावसि ययनि प्रदासा म
 दाल थ कृद लीमन थसिदि
 लि वाया
 पथा थजन का सं पूरु यरु म थया
 यादिन ॥ ॥ यथा ॥ ॥

१ सक सक ति व वानि मास
 सक दिनानि व तस्मिन् ली
 मन थना मामहा पात कना
 र्कन ॥ गुया जीति यव वानि
 वरु म्मा सांय सं पूरु ४ व ४
 सरु सुवि र्वाता नना एम न्याप

सद्यः ॥ ॥ ज्ञानवर्धन
 दैवदिनमासदशाविव।
 वमहावर्धनामा नानामि
 पिदल्लं ॥ ॥ नका (श्रु
 गतिधुमे श्रु ॐ उनी राति
 कयुके ४ पीरं शुक्रयुके
 श्रु महर्लसकका नयं गारु
 लाके मादगासु यालुवलाके
 उचन्द्रमा ४। स्वलाके जक्रद
 वाहिमहलाके यथासन ४।
 जनलाके जानि (श्रु व गय
 लाकयिगामह ४। सपलाके
 हनानि (श्रु मादगा दवगास
 ह ४। सकयथमिति प्राकं य
 नानाहकिमानया ४। जिवस
 हयमादकयावर्धनार्कम
 दिनी ॥ ॥ ॐ गिसकयथमा

अश्वत्थामावायविधि ॥ ॥

अश्वत्थामा रावेत्याया माय
 यावलिडयाग। ददि (श्रु वास
 नित्यकं नेर्मृत्युहममानम
 दा। वि लीषलासु वारुध्यावि
 प्रयकयसं स्मि १४ डलं न
 यनगुनामश्रु मार्क (श्रु य ४
 जिवदि जि ४ अश्रु गिविन
 जीकिन ४ स्तानं पूजा समाहि
 १४। कर्त्तुकायानि ज्ञाना
 थपूजातीमनथक्रम ॥ ॥
 धनविनीजीविधायविधि ४।

अश्वत्थामावाविधि ॥ ध
 न्यसिद्धाथकं येवककाकु
 सतीनकी। कानमाययमाय
 य मृज्ज अयिपवकथा ॥
 ॐ गिवी हि ॥ ॥

दीनदविद्युतं देवरुल

यकान्नमवच। नी वारसाः
विमिता दन्ने वैद्यका धार
कः ॥ ॥ अथ क्कामाय वि
द्रा ॥ श्रीवत्सपद्मकं विद्याद्व
जकलनमवच। यामनीमत्स्य
प्रमत्तु कुरुं ह मस्यदधुकी ॥
धारा विद्रा ॥ ॥
सर्वभूतोयमाहिकं प्रवा
लनीलकं तथा वैद्यकं वज्र
मित्कं पुनर्मानिकं मवच
। वीरजी वियानत्र ॥ ॥

वैज विष्णुपूजा ॥ यन्ममसुन
म॥ ॐ वक्रय क्लानं ॥ ॐ ॐ द
विष्णु ॥ ॐ नमः ॥ ॐ रत्नायय ॥
॥ ॐ यदुत्तरं नडाया वेदन
यज्ञायय ॥ ॐ तिरुत्तु विष्णु
यज्ञा विधिः ॥ ॥
नथसदन्नया वेद (था) ॥ ॐ अ

यं प्रनाह निक ॥ १४ सूर्यस्य न
न्मिस्तुत्तु नथरत्तु स्यन (था)
विष्णुस्य सना नी ग्राम (ध्याय)
जिक क्लाना कुरु क्लाना याय
न सोद दिवा व ४ यज्ञा वेदः
ति १४ यो नृपया वध ४ यदति
रुत्तु नमः ॥ १४ नमः वक्रुत्तु
मृत्तु यन्ममसुन ॥ १४ यदति
नाह विष्णु मवयि म् १४ यदति
नथसदन्नया वेद १४ ॥
१४ नमः ग (लासाय नमः १४)
१४ वक्रय यनमः १४ ध्यान ॥
नागयाग धर्न हृष्टं नत्ताय
यति विग्रहं ॥ १४ यदति धवर्न
ध्यायद्वत्तु मकनासर्न ॥ व
रत्ताय ध्यान ॥ १४ वक्र (लासाय
हृष्टं नत्ताय गहृष्टं महा
विष्णु १४ हिमकुरु देव (ध्याय)
रत्ताय नत्ताय विष्णु विष्णु १४

कामलाञ्जलिद्वीधाम
वल्गुसुखावनी। नानावत्स
विगागिदवसंगृह्ययातिना॥

ॐ यात दश कलिंग काष्ठ
यकूलञ्च यैर्विष्वाविता सफ
म्यामधि यसूनामिकयित्त
गृह्णन्ति पूजां दानं च
नृसूयकूटुलवलिदयं
हविर्द्विगुणं मन्त्रैश्चैकैकवृ
त्तमस्तुलगर्भोमीसदाशु
स्त्वन ॥ १ ॥ ॐ सामया ॐ
दत्वाऽं रवनमनूयययसा
दत्वाग्निगर्भिगर्भं मृद्वकी
र्तिकं नमस्तुत दिग्गवृत्ता
द्वकं मस्तुलीकोऽवद्विग
गसमस्तदिवऽं ज्ञेयऽं

गुरुं वन्दे सामं यो नमः
गगनाय त्वाधिपतये नमः ॥ २ ॥
ॐ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ याम्या
नाहिति प्रमथुलगां यथा
तथा वारुणं रागवद्वाङ्मयं
ज्वलिदगमी स्तब्धं विप्रं
धियं धूपं गुग्गुनधूपं कंद
हनकगन्धमिष्टं गुणं त्रयं
स्यञ्जन्मदं प्रियसदानिर्णयं
मामर्त्यं ॥ ३ ॥ ॥ वधया ॥ ॐ
ॐ (ग) वायि धूपं वधस्य मः
धियाना नायत्यं वधुर्वद्वद
श्रीमद्यथास्ति संलयकूलं
ताना धनिष्ठा तुङ्गं धूपं स
द्रुतं सनवन्निद्रं नैवीनातु
दक्षान् यत्किंचिदप्युदानं
यस्य मनसानिर्णयं मा वीक्ष
सं ॥ ४ ॥ ॥ वृहस्पतये ॥ ॐ
प्रोक्तियस्य दृताकृतननिधि

लिधूयं शवानावलिं द (१)
सिंधु सरालु (१) लुनयू (१)
वकुं वदयं सदा। सी मयं क
कस्य पागन रु व बु क्का धिद
व दिपा सा वि प्र नु व रु स्या
मख मख नी मि सदा हं गुनु
॥ १ ॥ ॥ शुक्रया ॥ ॐ यथा व
ल रुहात का मि न व मी दयं
धृता न्नं वलिं द (१) सा गव
नं सज्ञान वमी व ल्यात धूपं द
द ॥ दानं वा ॥ १ ॥ मरुत मख क
द्विगं शुक्रं वडा का धि व ददा
सी गिग पूर्व मि लु ल गां यथा
धि व न्दा यती ॥ ६ ॥ ॥
ज्ञानि ज्वलया ॥ ॐ शुक्रं द ॥ १ ॥
यसं रु वा य म धि य सी नायु
ना हि ल्यं धूपं वा गु न द व म
न कृ ग लीं ग सा मि न व लु ली
दीर्घं वा कृ ति य मि म ग नि य
म प्रा गा य गी य ल धि । य रि

वायु वन प्र द कृ जन मानि ल्यं
मख (१) वद ॥ १ ॥ ॥ ना कया ॥
ॐ यस्यां धूपं मि न न म रु क
रु न ला या ठ न म न या रु वं
धूपं म द रु ता स न म धूपं
पी ना ति मां सा द न्नं । ए पा ग या
य स ना रु का न म धि य य था
धि या गुं रु लीं । ॥ १ ॥ नि कान
य या हि य रु म धू ना (१) ॥ ॥
रु व मं ग लीं ॥ ८ ॥ ॥ क रु या ॥
ॐ ज न म य व ग म रु मी नु दि
व (१) ॥ १ ॥ गुं शा न म न १ क रु
शु द रु ता गि ली न म ० ० गि वि
ग धि व क्का य दं । य स नी रु रु
गा ग न धृ त य र विलीं रु धूपं
द ह वि ग न्नं व लि क्का ग दा
न मू दि तां ॥ १ ॥ नि य यु र्धि क रु
॥ ९ ॥ ॥ ज न म या ॥ ॐ द वं रु
न मू ना रु मां दि द ह न य था
धि व क्का य दं दानं व रु म न

क न्त वि वि धा नु या दि द म
ग वा १ पु र्वा सा र्क सु धू य म
न व लि रि ४ गं जा मि का व ल
रं जा नी स्त गृ ह ना मि मृ क
पू र्ण मो मी स दा ज्ञ नि क ॥

॥ १० ॥ य थ वा न य त्वा दि ॥ ॥
ॐ ति न व ग्र ह दा नं सा र्क स
मा र्क ॥ ॥ ॥

१ य रू या त ड प राल त्थ त ॥ ॥

अ द मा मा ल का ॥

१ सा सि मा ल का

१ सि म त्वा ग १

१ सा इ इ पा त ८

१ सा ध नि का त ८

१ ध ल क कि सा ध य १

१ अ व वी हि क स लि धा न ५

१ न व ग्र ह या त वी हि क स लि धा

१ अ व क मा या त क स नि धा न

अ व द न

१ ला ह मा ला ह या

१ अ ल हा सा पा १

१ ड रू ल स्तान

१ रु रु थ ३

१ (ग म य (ग म रु

१ व न्द वि म् के न वा ता वा

१ न व ग्र ह या त ग्र ह य ति

१ अ व क मा या त अ स म र्ग

१ अ व द ल मा ल का या ८ क

१ अ स न ख लि मा ल का या ८ क

१ य न्द या त ग्र ह य ति व न्द मा

१ सूर्य या त ल न ग्र ह य ति धा य

१ सी र व (ग म ३ १

१ सा र्क १ दान वि य या त

१ अ व द वी हि मा ल का रू ५

१ क ज यी ताल पु ८ ३

१ प लि लं द य ति ग म रु नि वि

१ लं वि त पु रू ५

ग्र ह य ति

१३ खंन १ वामग्रहनी २
 १४ नकुलि वाधुनि
 १५ कंकुम ग्राधुनि
 १६ ययलसं गिरुला पिकुड
 १७ नकु किं व ननुवा (ग)
 १८ नकु दी या द्वा हा लखान रु
 १९ नयकं गृ पद्म क गृ सुमुख १०
 २० सा न या सा क विर्य गृ गुं गुं न
 २१ ग्री ख लु सिधु गं १
 २२ नरुम का माल का गाय माल का
 २३ सा य पद्म क ज्ञा कत १३
 २४ सा ग ध नि ग म म ल स
 २५ सि ध ल का स ग म माल का रु १
 २६ क रु हा सु माल का १ व लिया २
 २७ न व ग्र हा या त का य माल का
 २८ अ ग्ग ल का मा या त ज म का माल का
 २९ न व ग्र हा या त न र म का माल का
 ३० ग ग मृ लिका क खाय पद्म द य
 ३१ क स प ल व क लं ग (ग) ३५

सनान कलं ग का ठाल द्रु श क
 १ रुता ल वा क लं ग पृ डा शाल न
 २ न व ग्र हा या त व ग माल का
 ३ अ ग्ग ल का मा या त वा माल का
 ४ धा ग ली म न थ पा ड प हा ल ॥
 ५ सा ध न कृ १४ वी हि स ला
 ६ द या त १ जि ग ल वा ला (ग) ३२
 ७ प व न ल ३ १ ल य न ड ह य न
 ८ ग १ ल अ गृ लिया ४ ड हा
 ९ अ गृ लिया ४ धा द य क
 १० श ना ॥ १४ व वि मृ १६ न ति ॥ स
 ११ र्थ वि वृ ल ति १२ ग्र ह य ति न
 १२ ति २ पद्म श न १ ॥ ध व ति अ
 १३ गृ क्क य नि न नान य ति ना
 १४ न कं व रु न या ४ क व मि ला ॥
 १५ मा धि माल का द य कं नृ य या त ॥
 १६ खान ल य गाय लू य या त अ क
 १७ न द्वा ल मि या सा दान या त
 १८ सा ध ८ १ ०० १५ १ कं ग वा ला

(ग) ३१ (का) ग व ल सि धा न ॥ ॥
 १९ धा ग ड प हा ल रु ना ॥ ३३ ३४ प्र ता पृ १५

ॐ रुगवन्नर लोकं ज्ञा जक्रनू
 यधनाधिय साक्षात्सहस्रन
 शर्वं हि दिवा दवतानकं ॥ मा
 नवीगनमासृपयालिगीनृ
 मकुल अष्टिगि सिमयादव
 कृत्वा मकुलं पूर्वकं ॥ मया कृ
 तस्य यदस्य यथा ज्ञा कृत्वा न
 रूयितं ॐ दमिन्दाय कलजं
 गवराग्य वि (न षग ४) सोमन
 सनमनसा गृह्णाति वसुधा
 धिय पुनस्का नविहीनय ॥
 तत्सर्वं कथयतां प्रजा ॥ मंगलं
 गव विष्णु मंगलं गनु उध्वं
 मंगलं वलुनी कार्द मंगलं
 मध्व सुदर्शन ॥ ॐ नमो नागा
 धिनाय सुखसंयतिदाय च
 सर्वलोकदयानाथ विष्णु मूर्ति
 नमानमः ॥ ॐ इ कलजं ज्ञा
 यवाक् ॥ ॥

ॐ सहस्रानि सहस्र (गवाक्षीत
 वरुण धना सामिसा (गवाक्षीत
 गवपनाचीना मुखवाक् विष्णु
 ॥ ॐ समददया धिया सदिदि
 तयार्थं यामामः ॥ ज्ञायुष
 माषी माहं गववीर्षं विदयं
 गवदक्षी ॥ ॐ गद्विवासा विष
 न्नवाशा गवा ॥ स ४ समीधस
 विष्णु र्थयदमं वद ॥ वक्राया
 साग ॥ ॐ यद्ययानि वरु मूर्ति
 मूर्ति स्नान निवासिनः ॥ सृष्टि
 कलमिका निर्यगं मेषं
 नमास्तुत ॥ ॥

ॐ	ज्ञान	पूर्व	शान
कु	(गम द	धलि	(गम य लिंग
धृत	वक्र	(गम	मश
(गम य	इइ	यव्य	जिज्ञनी॥

ॐ

ॐ

ॐ

१दधिनियव (गममृगं युध्यं
व्यव (गममयं । धृतीक (गमदकं
इयमं धृषणासुयाणकं ॥ ॥
१शदो (गममागृ विद्यामरु
मिज्ञाज्वनृयायय (गपि रता
दयासर्वममदहं गलं विदी
सर्वनृगततामा विमृगम
यं (गेलदार्जं । यति कुं वा
निधायार्दव (गवक्रमा
यव ॥ वापीकूपीतद । गम हि
गल (धनृप्रधमनिका प्रकन
लमादया एगुदयादवादि
सर्वकं । (गमवक्रमादिसर्व
स्मिधर्मस्या ना न विद्याप
थयथा वयालियं । विवकी
यानी (मरुगं । तथगतथा
कूपं सुग्री । धर्मा वृद्ध नि वृ
द्धति ॥ गल दनवाक ॥ ॥

१श्वत्कामाया वीहिपुवा

गगम । हाक । शीवक्रमावलि
या । नकागगम । विद्रु । य
प्रस्थान ॥ वासया । शकता
गगम । पीत । विद्रु धृज ॥ रुन
मानया वीहिक एगु छि (क)
इ गगम । विद्रु । कलण ॥ वि
लीयनया वीहि । म्वाग गग
मविद्रु । वामल ॥ कयया
वीहिमास । गगम । गायव
विद्रु । दा ॥ यन शुनामया वी
हि मृग गगम । वाद । विद्रु
कृग ॥ मार्कं (लुयया वीहि
कृ गगमका । गायु । विद्रु । ग
ख ॥ १श्वत्कामाया ॥
धृय धृयमृवा सिरावि युसदा
शीवक्रु दद्रु विद्रु । गृय को प्र
नयय धानि प्रगृणी वत्सवादी
यन । येद्रु संहिराया । वलुद्रु
विगृय मृक कवरासतं । डाणा
वाथीसूत नमामि सततं पृथ्वीम

आसुक्तिथ ०॥ ॥ ॥
 वासधासुक्ति ॥ मांसीधूयकमू
 दमायसहिगं पकात्रसुयु
 क।यसु।गायंवटवृकनल
 मानिकी वंशाननासुक्तिथ ० ॥

नवग्रहयात्र

१मानिक	१जम्बूद्वीप
१माति	१वज्र
१हिपू	१हिमन्त्र
१वदाल	१मानिक
१पृष्ठाग	१वज्र
१हृन्	१पुवात्र
१नीत्र	१मानिक
१नाडाट	१नीत्र
१कर्कटन	१वदाल
१माटि	१हृन् १माति

अथकामावीरि यत्ना श्रीखलुचन्दन गङ्गाहाक यम्यकयय्य विद्वद्गी
 वक्रु ॥ ॥ एवलिया यिका यद्वकावचन्दन कुसुवर्द्धडास रेयकैस्त
 मय्य पुष्टलिक विद्व ॥ १द्यासया अकक कयूनवन्दन पीगवर्द्धडास
 मजानीयय्य विद्व ध्वज ॥ १रुन्मानकठगुलि कर्क मवन्दन कादुडास
 कुनल पय्य विद्व कनेग ॥ १विलीयगया कानमाय (ममावन्दन पीग
 वर्द्धडास सुवर्द्धयुधि यय्य विद्व वासल ॥ १कयय्य माय देवदानवन्द
 न (जगपीगवर्द्धडास (जग पीग यय्य विद्व वा ॥ एयन लुनामया (मंग

गन्धवन्दन नीनवर्त्तु गङ्गा जीवियथा विद्मः ॥
सार्कलुयया यत्नव्रीहि मनशील वन्दनः (श्यागवर्त्तु गङ्गाका यद्म यथा
विद्मः ॥ ८ ॥ कलशयुक्ता यामथश भाषा धनकाया ॥

रगार्द्धवशासनाद्वीकिन्नमस्तु कसंयुगा (गदार्णखधनायामं दं कवक्रव
नयदा ॥ काटिहूर्य समीगङ्गा गङ्गा कियनसन्निरा नाना जलादिसंयुः
का नानात्तरनदतरु विगा ॥ बुक्का व्यादिगलमधी नं नव ४ सहसंयुगा
क्षणापदगुयी ० टयगा लुवनृत्ता (भक्तिगा ॥ तुलोकवायिनी देवी तुलोक
भक्तनूपिणी सर्वसिद्धिगलमधी नं नमस्तु गा ॥ सर्वानन्दमयी
देवी सर्वलक्षणसंयुगा । नाशनाश श्यनी देवा ४ स्तनरूपसिद्धिदा
॥ सर्वगुयाध्वानं ॥ ॥ पितृमकलयालक्ष्मण ॥ मकलयानार्थिगु

निहायकेशलङ्गकाय॥ध्वनिगुणवा॥थरे ध्वनिकसयानवाही॥ध्वनिस
स्वीवासङ्घिबानलखद्वेधनेदाग॥सीञ्जयथयद्विवाधानेगुणव्याश
लेङ्गकावनकेलखलेया॥बानईमकनयाकीलयाबानाईयाधनावा
नधिगुणहानड॥धानईसुत्वय्यावानपिगुणकालडनेस्वध्वर्वादा
द्वगालेधाय॥दावाकालसाङ्गसगाल॥धानईधाययाञ्जनरुमनगा
लका॥वृषलावकमाल॥नागकमालयानावृशना॥दवनकेसङ्गा॥
यितिगमउभूयामकलपिहाकायाध्वनकाध्वर्वादाङ्गकाध्वर्वादा॥

ध्वनिसस्वीवासङ्घिवायितिस्त्रयकमकलयायितिहायक्यथप्रसद
ङ्ककडिवक॥यितिमकलयाध्वननवाङ्काङ्किवाकीनसरुंक
डिवकअयथयवृशना॥गमउयास्ववासङ्घिबालेगाकाङ्काञ्जनखन
के॥यितिपाञ्जयथयरेकनबकानखनकेध्वननअष्टग॥॥
यितिमकलकासतरगिनयितेगमउनमकलेगायकनिन४समवाङ्कस
मद्वदिसमज्ञानसमयथातवति॥निगमयर्थयाययितिमाखवलाव
कमडिलसापथार्मठवने॥यनखदायायितिमाङ्गलध्वनिडावस

मश्या ख बस लायक ॥ छुं थि थि थि ज्ञादिन वृष आ व लायक ॥ थि थि
ति गाले रु घशनी ॥ सु री ॥ घटदाने याऊ ॥ अयादि ॥ यरु मानस्या मुक
नाम्ना विष्णुपीति कामावनरु दैवर्ग ॥ दैवर्ग ॥ न तस डिगि रु लयर्ग
छुं कयस्ताऊादिन घटदाने अमुक ॥ गमग यामुक नाम गममि ॥ लयाऊ
॥ यी रु दद ॥ ॥

१२ दव ॥ कायन गार्ति स्ति नयाऊ ॥ छुं अय वा ला रु ॥ छुं अयादि ॥ थि थि
ना सि दव ॥ ससु कि को रु व द री ॥ तानि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि
॥ सनाकु द्वियद निर्य ॥ ननाकु वय रु थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि
॥ छुं गि ॥ ये व च ॥ यरु मानस्य र ॥ थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि
कानादि ॥ ग ॥ थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि
नि ॥ ग ॥ व व र्य स रु सा नि ॥ जि व लो क म रु थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि थि
सु र्विन ॥ स रु थि

हंसलक्ष्मदानं वयर्थं काटिगुहं रुधे ॥ पावर्द्धदस्रस्रय ॥ स्त्रि नार
 वयिद्वग ॥ ॐ पावर्णीयावा ॥ ॐ नयितादिप्यरु नमिद ॥ ॐ मयिकरु ।
 यमपि यविनाक्षामिवासरुवृक्ष ॥ ॐ नयितादिप्यरु नमिद ॥ ॐ मयिकरु ।
 दीयावत्यनममानवेषणवद्युगसहस्रानि कर्त्तव्यिषू यनवस ॥ ॥
 स्त्रिनस्त्रायस्त्रि नारुव ॥ अग्निनाह नक्षत्रगुहजीर्वादि ॥ यैवातिषेक ॥
 यमिष्ठाकेल ॥ ॐ स्त्रिषेक ॥ ॐ द्वावर्द्धन ॥ ॐ द्वावर्द्धन ॥
 कर्त्त ॥ ॐ स्त्रिषेक ॥ ॐ ॥ यनदानस्त्रायन ॥ ॐ स्त्रि नार ॥ ॐ

[illegible]

ॐ नमो बलुमाये ॥ ॥
नो सि य वा क्लृप्त ॥ ॐ शा
दि ॥ ये ऊ मा ल्य च लु मा य
जा नि मि ल्य ॐ क ॐ श्री
वृ ह लान व ॐ द म य
न म य ॐ न म ॥
न ना न्या स ॥ ॐ व लु मा य
द द य ला द ॥ क ला अ न्या
स ॥ ॥ ग्रा ही य य ॐ
॥ ॐ न म ॐ द ॐ य ॐ ॥ ॥
आ त्म न मि व र्त्त न म ॥ आ
त्म न व र्त्त न म ॥ आ
त्म न य ॐ न म ॥ ॥
न ना व दार् च न ॥ ॐ न त्वा
जा मि ति ॥ द्वा रा च न ॥
न ना वि ष व द ॥ ॥
ॐ ॐ म न्द वा अ य त्त ॥ म ॥
ॐ ग ॐ ना ल्या ग न य मि ॥

ॐ अ सं ख्या ता स ह मा मि था ॥
ॐ वृ ह स्म न् ज ॥ मि अ न ॥
ॐ आ ह व न र ॐ सा व र
ॐ या यो दि र ग सा हा वा यो ॥
ॐ ॐ द ॐ ह वि ॥
ॐ वृ ह य ला नं य थ म ॥
ॐ ॐ द वि ॐ वि व र्त्त म ॥
ॐ न म ॐ म ॐ वा य व ॥
ॐ ग ना व मि नु ॥ ॥
ॐ न मी ॐ न ॥ ॥
ॐ व य ॐ सा म ॥ ॥
ॐ अ द्वा सा प गी ॐ ॥
ॐ स्व मि न ॐ ॐ ॥ ॥
य प दी य य त्त न व य
य मि ष्ठा ॥
ॐ म ना जा मि ॥ अ न ग
ॐ दि ॥ ॥ ॥

स्वाननन ॥

॥२॥

ॐ गंगाय नमः ॥

ॐ यमुनाय नमः ॥

ॐ आश्विनय नमः ॥

ॐ मृतकसाय नमः ॥

ॐ धर्मय नमः ॥

ॐ क्लान्तय नमः ॥

ॐ वैराग्यय नमः ॥

ॐ श्रीश्वराय नमः ॥

ॐ यज्ञाय नमः ॥

ॐ कर्मवाय नमः ॥

ॐ कलिकाय नमः ॥

ॐ सफहंसासनाना ॥

यगस्वान्मृकगवालाव

दकावधान ॥ ॥ ध्यान ॥

ॐ कृष्णकर्मजसंकाशं

यद्गकनदयं जगत्सिद्धिदि

र्शिणीम् ॥ ध्यातां शुभं निरुधिनीम् ॥

सफसरुविमानकं शक्तिम्

सहितस्मृतं सगकिं सायुधम्

न कलाधामरिर्भूतं प्रव

ध्यातानिनाथना पूजयन्मा

मनामनः ॥ ॐ चन्द्रमायध्या

नपूर्य नमः ॥ ॥ तनः पूजा ॥

ॐ ॐ नमः ॥ ॥ ॥

ॐ चमाय नमः ॥ ॥ ॥

ॐ निनाताय नमः ॥ ॥

ॐ नीतीश्वर नमः ॥ ॥

ॐ नमोलाभुनाय नमः ॥ ॥

ॐ मृगशाय नमः ॥ ॥

ॐ चन्द्रमश नमः ॥ ॥

ॐ सामाय नमः ॥ ॥

ॐ विधुव नमः ॥ ॥

ॐ नात्राय नमः ॥ ॥

ॐ नमिब नमः ॥ ॥

ॐ अषधीनाय नमः ॥ ॥

ॐ हिमालय नमः ॥ ॥

ॐ उदयय नमः ॥ ॥

ॐ शक्राय नमः ॥ ॥

ॐ निम्नाकर्तव्यं नमः ॥

आवाहनादि पूज्यं नमः ॥

नमो अर्घ्याय चक. नीख सद्र
द्वं नमस्तु नमस्तु नमस्तु
र्घ्याय ॥ ॐ अर्घ्याय नमस्तु
हत्यादि ॥ ॐ नीखताय समा
दाय सपूष्य रुल चन्दन ॥
जानूयाधन जीगला अर्घ्या
यैवति गृह्णातां ॥ ॐ दीक्षादा
र्घुव नमस्तु जगती नन्दकायक
॥ वनस्य क्रियते कर्म सादीरु
नत्यामं वहि ॥ ॐ नमो भूत
निम्नाथ लक्ष्मीयामनमो ॥
मुक्त ॥ वनस्य पूज्यताया गृ
हानाथ विष्णुमम ॥ लायक ॥
यन्मुमाय ॐ दमर्घ्यं गृहान
स्याह ॥ ॥ जाय ॥ ॐ जा
कीली सामायनमः ॥ ॥ ॥
ॐ जगदाय नमस्तु गृह्णा
ताय नमस्तु नमस्तु नमस्तु

कृष्णं प्रणमामि सुनाहम ॥

अर्घ्याय ॥ हृदयादि ॥

सहस्रचक्रया विष्णुनथपू

जा नमो सकलमायुजायाय

पुलिथ ॥ ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

१ लीमन थ वर्ष ११ मास १

दिन १॥ १८ सहस्र चक्र

वर्ष ६३ मास १८ दिन ८

१ दिव्य थ वर्ष ११ मास

१ दिन १॥ १८ ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ निम्नायुमायुजा ॥

ॐ नमः वर्ष दशमास
 दश हि दिवसानि तु
 डास देव नथ धा का
 स्वयं नूड वूनं ऊ (ने) ॥
 ॐ नवे वनि वर्षा नि
 नव मास नवा दिन
 द व न थ नु कृ यो सो
 सा द व य न मः नि व

१ कंठ गाय ॥ श्री द वी
 २ नागाय ॥ ग गी श्वरी
 ३ माधवाय ॥ का। की द वी
 ४ अविन्दय ॥ क्रिया द वी
 ५ विष्णु वी ॥ अमी द वी
 ६ मयूखे दनाय ॥ विरूति द वी
 ७ विव्रमाय ॥ वृं द वी
 ८ वामनाय ॥ प्रीति द वी
 ९ श्रीधराय ॥ श्री हित द वी
 १० रुषी कंठाय ॥ माया द वी
 ११ यद्वना लाय ॥ २ ती द वी
 १२ दामोदराय ॥ महि मा द वी
 १३ पूत्र दौ रुमाय ॥ पूम व

ॐ नमः श्रीधराय ॥ पूर्व दिवसे श्रीधर नागाय अपूर्वा विधि लिखित ॥
 आदी देवस्याः एवम् ॥ आसनाय विष्णवे मङ्गलार्थं यत्
 मान ॥ चन्दन वृषा लवणं ॥ चन्दनाक्षत पृष्ठी २ स्त्रोत्तरार्थं ॥ अथ ॥
 अस्मन्भवनी कर्म निमित्तं श्रीधर नागाय अर्चन कर्तुं ॥ ॐ नमः
 कृष्णि पृष्ठी २ ॥ पूर्ण २ ॥ गुन्नास स्त्रोत्र न्यास ॥ खपूजा स्त्रोत्र पृष्ठी २ ॥
 देव स्नानं ॥ अथ नमः ॥ ॐ नमः ॥ अथ यथा विधी ॥ दक्षि ॥
 अथ चिका प्रा ॥ अथ ॥ ॐ नमः ॥ अथ ॥ अर्चना ॥ ॐ नमः

नामासि॥ प्रनर्कं लेनस्तानी॥ उं सरुमुभाषादिभीषणं पर्णनकपुत्रसुर्कं
सर्वप० ॥ २२॥ ॥ अर्जुनभययाविष्वयस्त्रयवीर्णं अथयित्वासुमर्कयणं॥
चन्दनी॥ उं गन्धदानी॥ सिन्दूरं॥ उं स्त्रीकुविषुदा॥ ॥ रावकिली॥ उं वीहयश्च
म॥ ॥ राक्षसपवीर्णं॥ उं यस्त्रयवीर्णं॥ वसु॥ उं वसाश्च विगुमसि॥ ॥
अर्लकाली॥ उं अर्लकत्रनमसि॥ ॥ पृष्णुलसीदलं च॥ उं याश्च लुनेनी
प्रनन्यासं कृत्वा भीखाद्यपाणपूजनं॥ ॥ अथ सुनपूजा॥ उं आनादि
अष्टपद्मासनाय२॥ उं गन्तुसनाय२॥ ॥ चन्दनाक्षतपृष्णं कृत्वा त्वा

नप० ॥ ॥ दक्षिणार्धकनचर्कं कृत्वा सुदामधकर्म॥ गदीर्षीखेनथवा
म॥ धनीविदुभाषमं॥ अथपृष्णं॥ ॥ पाद्यादिगुणीकालि३॥ कृदया
दि६॥ ॥ उं गौमन्त्रये२॥ उं दक्षिणये२॥ उं वक्राय२॥ उं वक्राय२ः
उं गदाय२॥ उं भीखास२॥ ॥ उं वक्राभसाविगीर्णकिं सदिनाय२॥
उं विष्णुवसुक्षीर्णकिं सदिनाय२॥ उं नृदायवाचं गीर्णकिं सदिना
य२॥ उं लोभमाय२॥ उं एतद्वाजाय२॥ उं विष्णुमिगाय२॥ उं
रुमद्वनय२॥ उं वसिष्ठायाय२॥ उं कथ्यताय२॥ उं अरुय२॥ ॥

ॐ अर्चये २ः ॥ ॥ नागपूजा ॥ ममि को नागत्राजाय २ः ॥ ॥ अथ ध्या
 उभा मृगालि ४ धी उभा उववा ३ः संपूज्य ॥ ॥ आवाहने ॥ वंद ॥ सरुम
 भीषी ॥ मनु ॥ आगच्छ एगवन्निष्ठा सर्वथा सर्वदृष्टि ए ॥ तस्यादक म
 से ए क्ती पूजया मिसुनेष्यत ॥ सैक स्य वाक्कुः ॥ अद्य सर्वपापविनिम्
 कि का मा एग एग विष्ठा ना वाहन महेक त्रिधा ॥ १ ॥ आसन ॥ वंद ॥
 उपन्यस्य अवद ० सर्व्वय दूर्गय च एवम ॥ उगाम ॥ त्वष्टा भनीय दन्त्र
 नाति गुरुति ॥ मनु ॥ आसन स्य प्रदा भन स्तु न स सर्व्व उ विन्द कि ॥

पादपी ० पुदामे नग ॥ ये वचन गीरु म ४ ॥ वाक्कु ॥ अद्य सर्व्व उस्तु भना
 एकाम ० दमा सने एग एग विष्ठा वगुल्य महे संपद द ॥ २ ॥ वादी ॥
 ॐ नगावानस्य महि मा भ ॥ आयां अयन्त्रः वा दो स्य विष्ठा त्वगानि जिग
 दस्या मरु न्दि वि ॥ वंद ॥ मनु ॥ ॥ भमदानरु लमा प्रोक्ति ॥ भपाद्य प्रदान
 त ४ ॥ दवद वस्य विधि ना सर्व्व पापे ४ पु म्च न ॥ वाक्कु ॥ अद्य सर्व्व पाप
 विनिम् कि का म ० दं वा दी एग वरु विष्ठा वगुल्य महे संपद द ॥ ३ ॥
 अर्च्य ॥ वंद ॥ ॐ जिग दूर्ग उद्रे त्स्त्र च ४ ॥ दा स्य हा एव स्य न ४ गग वि

स्वप्नकामत्साक्षानानथान॥ नमः ॥ अहो ॥ मनु॥ सपृष्ठीवात्रिभवार्यद्वि
 दानसमन्वितं ॥ योदद्यान्नासुदवस्यन्त्येवमसर्वमोमरवी ॥ वावा ॥
 अद्यसर्वमोमरवध्यापि ॥ कामं ॥ ॐ ॥ अरिक्कनभक्तद्विद्वानपृष्ठाः
 समन्वितयोग्यार्थ्यभारणवतविष्णुवतुल्यमहंसेवदद ॥ ५ ॥
 भवमनीयकं ॥ वद ॥ ॐ ॥ नमः ॥ विनाउजायतविनाओअधिपूत्रवसज्जा
 गोअत्रिचोत्तपश्चद्विममथमपूत्रमनु॥ नीर्थनर्यनथदत्ता
 दवस्थावमनीनत्र ॥ सर्वलोकमगाधो ॥ निसर्वपापविवर्द्धि ॥ गणावा

क॥ अद्य सर्वपापविवर्द्धितस्य वर्ज्यलोकप्राप्ति, काम ॐ दंती र्थमिच्छा
 तमनीयकं एगवर्तं विष्णुं वलुत्यमहं संप्रदद॥ ७ ॥ स्त्राने॥ वंद॥
 न स्थाद्य ह्यस्तु सर्वदुःखं स सुहृत् पृषदा ह्येष॥ पश्य महां श्वर्कं वायणा
 नागभ्यः अनुमत्या भूये॥ मनु॥ सुष्णीतसेनेषा यमः स्त्रापयेद्भूलक्ष्म
 यिनी॥ वृक्षलोकमवाप्नोति यावदिन्द्राश्वपुद्गल॥ वाक्॥ अद्य
 च उद्देल्लो न्यादि नैमयाधिकतमफुल्लभैक कामसुष्णीत
 भुवन एगवर्तं विष्णुं महं स्त्रापयिष्य॥ ८ ॥ च नन्दन॥ वंद॥ ॐ नमो

यद्वा सर्वद्वन्द्वसुवद्वन्द्वसामानि यद्विन्द्वन्द्वसामानि यद्विन्द्वन्द्वसामानि यद्विन्द्वन्द्वसामानि
सुस्मादजायत॥ मनु॥ वन्दनसुस्मिन् नन्दु सो कमवाप्या
॥ अमली त्रिम्भी सेद्वन्द्वसुस्मिन् नन्दु सो कमवाप्या
सो प्राप्तिः अमली त्रिम्भी सेद्वन्द्वसुस्मिन् नन्दु सो कमवाप्या
काननलेपनमहक त्रिषु ॥ ॥ कसुमदान ॥ वेद ॥ उक्तस्मा
दध्वः अजाय कथके सो एवा दत्तः ॥ अमली त्रिम्भी सेद्वन्द्वसुस्मिन् नन्दु सो कमवाप्या
स्मा ज्ञाना इन्द्रजावयः ॥ मनु॥ दध्वः अजावयः ॥ मनु॥ दध्वः अजावयः ॥ मनु॥

सुस्मिन् नन्दु ॥ नन्दु लेस एतन्मन्त्रो ह्यो कसुमदान ॥ वाक् ॥
अश्वत्थः ॥ सनु अमली त्रिम्भी सेद्वन्द्वसुस्मिन् नन्दु सो कमवाप्या
वन्दनानन्य ह्यसुमरुले प्राप्तिः कामानुरिस्तु सुमेरुगवर्क
विष्णु मरुच्यिषु ॥ ८ ॥ पूषा वेद ॥ गीयद्वन्द्वसुस्मिन् नन्दु सो कमवाप्या
वन्दनः ॥ नन्दु दवाः अश्वत्थः ॥ मनु॥ दध्वः अजावयः ॥ मनु॥ दध्वः अजावयः ॥ मनु॥
सर्वद्वन्द्वः ॥ सर्वपापविवर्जितः ॥ पूषा दध्वः ॥ प्रीति विमान
विनाजितः ॥ वाक् ॥ अश्वत्थः ॥ मनु॥ दध्वः अजावयः ॥ मनु॥ दध्वः अजावयः ॥ मनु॥

१ हृदय ॥ ५ ॥ घृतदीप ॥ वेद ॥ अंग सन्ध्यादधु ४ क फि ५ वा कल
यन् ॥ मख किमस्यासीति म्नाद्रु किमूत्रवादाः उच्यते ॥ मन्तु ॥ घृत
वाचने नदीपन द्वालयत्वेन ॥ अफिष्ठाणा विमानन विष्कृषीकः
महोरियते ॥ वाक् ॥ अद्य सकल पाप विमर्क पूर्वक सहस्रादि सम
प्रत्यक्षीति विमान कर्त्तव्य विष्कृषीक मही स्व काम ०० दीष्ट
गदीर्घ एवावर्त विष्कृषी हृदय ॥ १० ॥ हविषी ॥ वेद ॥ अवाक् ॥ असा
मख मासी द्वाद्रु ना ऊन्या ४ कृत ॥ उन्नत स्यय द्वे ४ व द्या ० ४ १ दी

१ अजायत ॥ मन्तु ॥ हविषी संस्तुनाथ नयव (गम धूम धमलय ॥ ति
सम्पदा दया माषा वीरुयश्च प्रियं हृदय ॥ वाक् ॥ अद्य विष्कृषीति का
मनुता निघृत पकाना निरुणवर्त विष्कृषी हृदय ॥ ११ ॥ वेदावर्त
॥ अंतत्वायामि ॥ अंसहस्र मीर्षा ॥ अतद्विष्कृषी ४ वत्र मम्यद ० सुदावः
४ अन्ति सुनय ॥ दितीव तद्वा नागम ॥ अंभी ४ वत ॥ अं हिन अतवर्त
॥ अंसवल्भु सिगत्रत्वा न्ति वृत्तु सित्रो गमय एषु द्वा हृदय नयव
दोः ॥ अम १ अं त्वा कृन्दा ० स्या म्नि नियतं ० विना मसा मरुत नृवा

मधर्वायद्वायद्दीयम्बुं विष्णुभावा सुपल्लुसिगन्तुत्सादिदिवः
 कीं स्वपतः॥ उं वक्कज्जलनी॥ उं ॐ देविष्णु॥ उं नमः सुमरुताय व॥
 उं ज्जम्भस्विके॥ उं सफ सुषराय॥ उं वन्मसा॥ उं सुमि न ॐ ॐ
 ॥ ॐ ॥ क्षप॥ दीय॥ उं गालुनीति रुनी॥ उं मनी रुति प्रणि सु॥ ॥
 जपमभुल सुण॥ वद॥ उं दनुमामनसी जगन्महा ४ सुर्गो ज्
 जायत ॐ ॐ लादाय ॐ ॐ यन्मखादधि तजायत॥ सुमि मनु॥
 सुर्ववदं ष्य न्य ॐ ॐ सुर्वती ॐ ॐ ष्य रूनी॥ न रू से समवाप्रातिः

सुखादवऊनार्दनी॥ वाक्॥ सर्ववेदाभ्यामसर्वगोचरिवनऊना
रुसपाणि, कामोत्तावर्कविष्णुमहंसासामि॥ १२॥ अएनानाफो
यैव॥ ७॥ प्रदक्षिर्भ॥ वेद॥ उं ना ह्या आसीदन्कत्रिदशभीष्माद्यो
१२समवकु॥ पक्ष्यात्मिदिश१४॥ अत्राद्रुधलोकां शंभुकरा
यन॥ मनु॥ प्रदक्षिर्भयकुर्वन्कि॥ एकियुक्तनशतसा॥ नर्तयाम
वृत्रीयाकि॥ याकिपृथकुर्तावर्ति॥ वाक्॥ अद्ययामपूत्रीगाम
नाएवपृथरुश्लोकवामनकाभाएवावताविष्णो१४प्रदक्षिर्भः

महं कत्रिषो ॥ १३ ॥ क्षमा ॥ वद ॥ यत्प्रपन्नं हविषा दवाय हूमन
न्यत ॥ वसुन्को स्यासीदर्थं गोष्प ॥ १४ ॥ मनु ॥ विविही
नं महीनं वायस्त्रिद्वयया दितं ॥ क्रियास्त्रीनं विहीनं माह किल
नं जनार्दनं ॥ यत्प्रदितं मया दत्तं पत्रिपूर्वकं दत्तु मे ॥ १५ ॥
अपनाय सुफि ॥ वद ॥ सुफासा सम्यत्रिधयस्त्रिधस्य मिध ॥ क
गा ॥ दवाय च कन्धाना ॥ अदध प्रपृष्य पशुम ॥ मनु ॥ अपत्रा प्रस
हस्य ॥ भिक्रिय गेहं निःसम्भया ॥ दादा साह मिमिमांसा क मस

मधुस्तदन ॥ १६ ॥ दत्तं दत्ति ॥ अष्टा क्रम पूजा दत्ति ॥ मनु
विसर्गुर्न ॥ ॥ विसर्गुर्न ॥ वद ॥ यत्नय हूमय कुं दवा सा निध
आ निप्रथमान्यासन् ॥ गेह नार्क महिमानं सत्तनय ज पूर्वसा
व्य ॥ स निदवा ॥ मनु ॥ गच्छ गच्छ पत्रि स्तानं पत्रा भपृष्यो हूम ॥
य एव प्रादया दवा विषा क्रियत्र मय दं ॥ १७ ॥ न्यास स लि काय ॥
सूर्या सा द्दि ॥ वाक्त्र नय कुमा ॥ आसि चो दं ॥ ॥ वृन्ना जोः
दीप दानं यथ ॥ भक्ति जा गत्र गं व नृ ग ॥ तादि कं कुर्यात् ॥

[illegible]

मृण्मदः॥ प्रमानः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥
 अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥
 अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥
 अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥ अवनः॥





कर्मणि
 असाग्या
 वि ले द
 पक्रम
 कर्मणि
 असाग्या
 वि ले द
 पक्रम
 कर्मणि
 असाग्या
 वि ले द
 पक्रम

अथकासाथन
 असकन
 सिद्ध
 नवेगदथन



सकयथ
 अदमान
 वाता
 वाकल
 अनविय
 यरुमान



मग

यवगयका

सिद्धमन
 अरु वाता
 शिवलि